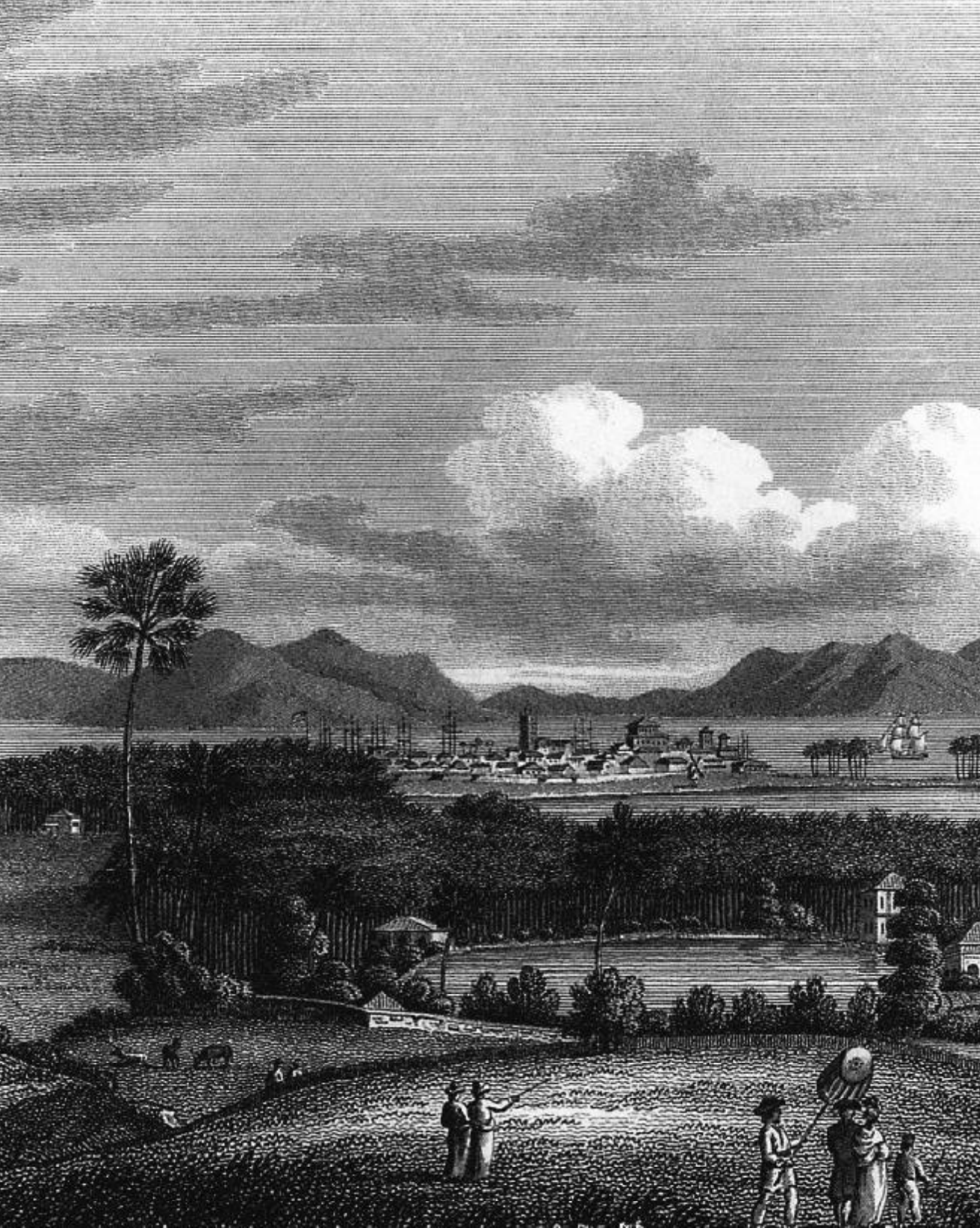

# शहर की कल्पना करना

## औपनिवेशक-बांबे के नगर प्रभागों का नामकरण

**प्रीति चौपरा**

एक समाचार पत्र ने हाल ही में,एक लेख व्दारा एक चौक जिसका कि नाम किसी भारतीय के नाम पर रखा गया था, को बदले जाने के विरोध में बढ़ते हुए जन आक्रोश की ओर ध्यान आकर्षित किया था। नाम परिवर्तनों का यह दौर तब से अधिक बढ़ गया है, के हाथों में नगर का नियंत्रण आया था। एक शिवसेना पार्षद ने यहआरोपित लिया था कि दादर कें खोदाद सर्किल का नाम किसी अफगान देवता के नाम पर रखा गया था, इसलिये उसे बदल कर स्वामी समर्थ चौक कर देना चाहिये। अफगान अर्थात मुस्लिम,जो कि एक ऐसा समाज है जिसकी शिवसेना कट्टर विरोधी है। इस प्रस्ताव से स्थातीय निवासी नाराज हो गये, उन्होने बतलाया कि यह नाम शहर के ही एक नागरिक के नाम पर रखा गया था जो अल्पसंख्यक पारसी समाज (इरानियत जोराषट्रीयन कम्यूनिटी) का था जिसका नाम खोदाद ईरानी था। तत्कालीन स्थानीय पार्षद जो विरोधी पार्टी कांग्रेस से था ने प्रत्युत्तर दिया कि, भारतीय नामों वाली सड़कों और गलियों के नाम नहीं बदले जा सकते।हालांकि शहर के अधिकांश इंगलिश नाम परिवर्तित किये जा चुके हैं। महान प्रादेशक, भाषायी और धार्मिक विविधताओं से भरे इस शहर को एक हिन्दू और एहाराष्ट्रीय नगर में ढालते की शिवसेना की आक्रामक कोशसों का विरोध बढ़ता जा रहा है। हालांकि यह चित्ता जनक है पर यदि हम इसे दीर्घ एतिहासिक द्रष्टि से देखें तो पाएगें कि इस प्रकार के प्रयत्न शहर में पुनर्नामकरण के लखे इतिहास की केवल एक और परत हैं।

नामकरण / पुनर-नामकरण यह एक क्षेत्र विशेष पर अपने स्वामित्व को व्यवत करने की एक प्रक्रिया हि सकता है। सामान्यत:यह एक आक्रामक कार्य नहीं है। अपनी अपनी संस्कृति के अनुसार यह एक नाम की, एक मूर्ति की, एक भवन की या एक स्थल की व्याख्या का तरीका भी हो सकता है मैं इस आश्चर्यजनक तथा का परीक्षण बाम्बे 1800-1918 के संदर्भ में भारतीय और ब्रिटिश दोनों के ही दृष्टिकाण से करुंगी। भारतीय और ब्रिटिश दोनों ही दृष्टिकोण अपने आप में अलग नहीं हैं। अधिक ठीक तो यह है कि मैं इन दोनों दृष्टी कोणों के परस्पर-व्यवहार का विश्लेषण करुगीं। शहर के

प्रभावों का क्रमानुसार नवशा हमें बतलाना है कि किस प्रकार बिल्कुल विभिन्न तरी कों से लोंग शहर की व्याख्या, कल्पना और अनुभव करते हैं मेरा तर्क है कि ब्रिटिश लोगों ने मूलत: इस शहर को जातियता के दृष्टरोग से देखा था, परिणाम स्वरुप इस शहर के विषय में उनकी समझ और अनुभव काफी उथले रहे। इसके विपरीत भारतीयों ने इस शहका अधिक जटिल तरीकों से अध्ययन और अनुभव किया है। उन्होने शहर का जो नवशा बनाया उसमें शामिल हैं, धार्मिक इमारतेइ, पानी के तालाब,मूतियों,बाजार और अन्य बस्तियां जिनमें बाम्बे की विविधता पूर्ण जनसंख्या रहती है। अइतिम विश्लेषण के अनुसार भारतीयों और ब्रिटिश दोनों ही को इस शहर को समझते ओर नियंत्रण करने के लिये स्थानीय-जानकारी की पहुँच जरुरी थी। फिर भी एक राज्य करने वाली शवित के रुप में ब्रिटिश शासकों व्दारा प्राप्त की गई स्थानीय जानकारी का प्रयोजन तो यही था कि उसका पूर्ण उदयोग, जानकारी और वास्तविक शहर को नियंत्रण में रखने में किया जा सके।

## अधिकार जताने का एक कार्य-नामकरण और पुनर्नामकरण -एक ब्रिटिश वर्णन.

अंग्रेजों ने शहर को रंग और आबादी के नमूने पर देखा। अर्थात उनकी दृष्टि से जहाँ भारतीय रहते थे उसे वे नेटिव टाउन या ब्लेक टाउन कहते थे, जिसकी खासियतें होती थीं, घनी आबादी वाली बस्तिया, इमारतें, बाजार और तंग गलियों का नेट वर्क। यूरोप के निवासियों के लिये यूरोपियन ववार्टर्स थे या वे बाजारों से परे,उपनगरों में बगीयों से घिरे विशाल बंगलों में रहते थे। शहर के विभागों का यह अध्ययन अंग्रेजों के उन प्रयत्नों को प्रतिंबिम्बि करता है, जो उन्हेंने बाम्बे की गहन जटिलता को आसान बनाने के लिये किये थे।

## फोर्ट, ब्लेकटाउन उपनगर, : जातियों का प्रथकीकरण

बॉम्बे में, 1715 और 1743 के मध्य निर्मित फोर्ट, उपनिवेशी नई आबादी का केन्द्र स्थल था, 1862 मै जब किले की दिवारे किरा दी गयी तब भी काफी समय तक था। फोर्ट : अपन आपमें जातीय आदार पर दो भागों मे बंटा हुआ था। अंग्रेज दक्षिण मे रहते थे और भारतीय श्रेष्ठ धनिक वर्ग उत्तर मे रहते थे। जेम्स मेकेन्जी मेक्लीन (1835-1906) बॉम्बे गजट के सम्पादक और नगरपालिका के एक सदस्य ने अपनी 'बॉम्बे गाइड' में संदर्भित किया है किठ दक्षिणी फोर्ट युरोपियन क्वार्टर है दक्षिणी फोर्ट में नेटिव बाजार है जिसके अधिकांश निवासी पारसी है।ठ फोर्ट के मध्य मे दोनों हिस्सों को विभाजित करते हुए, उपनिवेशी संस्थाओं से घिरा हुआ एक धुलभरा मैदान था, बॉम्बे ग्रीन जातीयता से भरा यह विभाजन स्वयं अपने आपन नही हो गया। 1772 में सरकार ने एक आदेश जारी करके युरोपिय लोगों के अलावा अन्य किसी को भी चर्च स्ट्रीट के दक्षिण में किसी भी प्रकार के निर्माण कार्य की मनाई करदी, जिसके कारण उन नेटिवस् को जो वहाँ रहते थे, फोर्ट की दिवारो के बाहर नये मकान बनाने के लिये मजबूर बनना पड़ा।

ऐसा प्रतीत होता है कि, भारतीय फोर्ट के अंदर बहुत पहले से रहते आये थे, क्यों कि जब 1746 मे फोर्ट के बाहर निर्माण करने के लिए नये क्षेत्र आवर्तीत किये गये थे, तो युरोपियन और भारतीयो दोनों को दीवारो के बाहर निर्माण के लिये प्रोत्साहित किया गया था। 1750 में फोर्ट के बाहर के कुछ प्रसिध्द घरों का, जिनमें युरोपियन लोग रहते थे, उल्लेख मिलता है। माहिम में एक ..... था जिसका मालिक थोमस व्हाईट हाल था। मजगांव 'मार्क हाऊस' जिसे सरकार ने 1750 में थोमस बायफिल्ड को किराये पर दिया था और परेल में गवर्नर हाऊस था जो एक पुराना पुर्तगाली पुजा स्थल और मठ था जिसे 1720 में जेसूट्स से जप्त किया गया था। वहा रहने वाला प्रथम गवर्नर हार्न बी था जो 1771 ते 1780 तक वहा रहा था। 1750 और उससे भी बहुत पहले से मजगांव में धनी पुर्तगालीयों और अन्य लोगों के बहुत से घर और कन्ट्री हाऊस रहे होंगे। अंग्रेज हाफिसर्स कोलाबा में कुटीरों और तंबूमें रहते थे और आगे चलकर अठारवीं शताब्दि के

अंतिम चौथाई में वहाँ कोलाबा में एक सैनिक छावनी की औपचारिक स्थापना हुई। फिर भी यह कहना कठिण है कि 1750 के पहले क्या युरोपियन लोग बड़ी संख्या मे फोर्ट के बाहर रहते थे? यह संभव है कि गवर्नर के द्वारा परेल में अपना आवास बना लेने के समय 1771 के बाद से ही युरोपियन लोग वहाँ बसने के लिए उत्साहित हुए होंगे। एक पर्यवेक्षक के अनुसार 1852 तक कुछ ही अंग्रेज परिवार फोर्ट में रहना पसंद करते थे। और वह भी अपने कार्यालयोंकी निकटता के कारण। इसका मतलब है कि ज्यादातर लोग फोर्ट के बाहर रहने लगे थे। उस समय तक मलबार हिल क्षेत्र अपेक्षाक्रत कम विकसित हुआ था क्यों कि मलबार पाइंट पर बने गवर्नर के बंगले का तत्कालिन उल्लेख एक ग्रामीण आश्रय स्थान के रुप मे किया जाता था।

1787 तब फोर्ट में अवैध कब्जों की समस्या इतनी अधीक बढ गई थी कि भारतियों द्वारा बनाये गये निजी घरों का अध्ययन करने के लिए एक समिति नियुक्त की गयी। दुकानों के आगे बढ़ाये हुए भागों को एनक्रोचमेंट (अवैध कब्जा माना गया)। दुसरे मामले जिनका परिक्षण किया गया वे थे गलियों की चौड़ाई, इमारतीयों की उँचाई और शहर की हरियाली थी। खुली जगह में वस्तुओं का रखा जाना। 1803 में, आग लगने से फोर्ट का एक तिहाई भाग बरबाद हो गया था, जिसने अंग्रेजों को विवश किया कि वे शहर में कुछ दीर्घ कालीन नियोजित परिवर्तन करें।1750 तक, फोर्ट की दीवारों के उत्तर मे एक नया कस्बा अस्तित्व में आ गया था, लेकिन यह 1803 के बाद ही हो गया। कि उस क्षेत्र मे एक नेटिव कस्बा पुरी तरह बस गया। आग लगने का अभिप्राय इसी में विहित है कि, फोर्ट की दीवारों के पार नेटिव कस्बे का कम विस्तार हुआ।

एस. एम. एडवर्डस् बॉम्बे का तत्कालिन पुलिस और नगरपालिका आयुक्त थे। और तीन 'गजेटियर्स आफ बाम्बे' के संकलन और बाम्बे पर लिखी गई बहुतसे पुस्तकों के लेखक ने टिप्पणी की थी कि - ' सरकार की बहुत पहले से यह इच्छा थी कि मद्रास की तरह ही यहां पर भी एक ' ब्लेक-टाउन विकसित किया जाए। '

ऐसा लगता है कि उन्होंने (सरकार ने) यह लिखा था कि हर एक दृष्टीकोन से यह वांछतीय है की नेटिवस् को एसपलांडे से सटे हुए 'आरोट' में कस्बे के लिए जगह देना चाहिये जैसा की मद्रास में है या फिर कलकत्ता कि तरह किले और कस्बे के बीच प्रथकीकण होना चाहिए।

यह नया कस्बा बहुत वर्षों तक 'ब्लेक टाऊन' के नाम से जाना जाता रहा और बाद में उसे ' नेटिव टाऊन' कहा जाने लगा।1838 मे एशियाटिक जनरल मे एक गुमनाम लेखक ने इसके बारे मे लिखा था - '' एक व्यस्त दौड धुप वाला लेकिन गंदा भाग। ''

'ब्लेक टाऊन' कहा जाने वाला, अनगिनत आवासों मे फैला हुआ यह कस्बा नारियल के पेड़ों के जंगल के मध्य मे एक अद्भूत, व्यस्त दौड़ धूप से भरा लेकिन गंदा स्थान था। बड़ी संख्या में लोगों और घरिया किस्म के जानवरों से वह भय पडा था और ऐसा हर तरह का पात्र जिसे एशिया पैदा कर सकता है वहां मौजूद था।

1880 में प्रथम बार मेक्लीन ने इस क्षेत्र को 'नेटिव टाऊन' के नाम से संबोधित किया था, पर यह स्पष्ट नहीं है कि नाम से पहले कब चलन में आया। 'नेटिव टाऊन' की सीमाओं का नक्शा खींचते हुए मेक्लीन कहता है की यह फोर्ट के उत्तर एसपलांडे के उसपार स्थित था तथा ग्रांटरोड तक जो उसकी उत्तरी सीमा बताता था, फैला हुआ था। इसके उस पार उसकी उत्तरी उपनगर बसे हुए थे जैसे की तारदेओ, भायकला, मजगांव और परेल थे और जहाँ शहर की जनसंख्या के युरोपियन तत्व अधिक प्रामुख्य से बसे हुए थे। मलबार हिल पश्चिम में स्थित था और उन्नीसवीं सदी के अन्त तक अमिर भारतीयों और युरोपियों का एक जनप्रिय निवास स्थल बन गया था। मेक्लीन ने 1880 में 'उपनगरों ' शब्द का का प्रयोग किया था लेकिन मरीआने पोस्टन्स ने इस

शब्द का प्रयोग और भी पहले 1838 में किया था। पोस्टन्स के प्टिन पोस्टन्स की पत्नी थी और बाद में उसने यंग नामके एक मिशनरी से शादी की थी। उसने पश्चिमी भारत पर बहुतसी किताबें लिखी है। बाम्बे में उस समय उपयोग में आने वाले वाहनों के सन्दर्भ में उसने लिखा है कि- बंदर गाह से उपनगरों के घंटे भर के ड्राइव के दौएन आपको अद्‌भुत प्रकार के नजारें देखने को मिलेगे-। फिर भी हम पाएगें कि मे कलीन ने तो अक्सर ही उपनगरों शब्द का प्रयोग किया है पर पोस्टन्स ने सिर्फ एक ही बार बाम्बे के अपने वर्णन नें वैसा किया है।

1838 के एक लेख में पोस्टन्स ने लिखा है कि फोर्ट के अदर दो बड़े बाजार थे चायना बाजार थे, चायना बाजार और चोर बाजार, फिर भी, आगे-एसपलान्डे के एसपार तीन बड़े बाजार स्थित थे। और यूरोपियन लोग इन बाजारों से भी आगे रहते थे। गर्मियों के बहुत से युरोपियन लोग अपने अस्थायी बंगले एसपलान्डे पर बनाने थे। वर्षा ऋतु के आरंभ होते ही ने इन्हे मिटा कर वास्तविक निवास स्थानों में चले जाते थे जो किया तो फोर्ट में मिलते थे या गिरगाम, भायखला, चिन्ट्ज पूगली ( चिन्च पोकली) और बाजार के उसपार के अन्य स्थानों में मिलते थे, जहां यूरोपियन लोगों ने पक्के और सुन्दर घर बनाये हुए थे जिनमें रमणीय बगीचों के साथ आफिस भी जुड़े रहते थे।'' -(पक्के से अर्थ है पत्थर और चूने से बने मकान।)

यूरोपियन लोगों के लिये ' नेटिव-टाउन ' वह क्षेत्र था जहां विशेष कर यूरोपियन तत्व नहीं-होते थे इसके अतिरिक्त 'नेटिव टाउन' के बारे में यह भी वर्णन था कि ' वह अत्याधिक घना बसा हुआ, एक गंदा,संग गलियों और बाजारों वाला क्षेत्र था। इसके विपरीत वे स्थान थे, जो कम घने बसे थे, बगीचों से घिरे बंगलो में जहाँ यूरोपियन लोगों और संपन्न भारतीयों के आवास थे। बाम्बे के चित्रों 1.1 और 1.2 में इस तुलनात्मक घनत्व को दिख लाया गया है। एसपलान्डे व्दारा फोर्ट से पृथक नेटिव टाउन घने पट्टे की तरह व्दीप के आर पार पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ था।

जातियता के आधार पर किये गये, शहर के अंग्रेजी विभाजन हा ने उन तरीकों को सीमित कर दिया जिनके व्दारा वे शहर की कल्पना और अनुभव कर सकते थे। जबकि उनके अधिकांश लोग उपनगरों में रहते थे। बहु-जन भारतीय जिस भाग में रहते थे, उसे वे 'नेटिव टाउन' कहते थे। नेटिव टाउन के अंतर्गत भी अन्य प्रभाग थे जो उनके कार्यो और धार्मिक विश्वासों के अधार (पर अलग अलग बंटे हुए थे। फिर भी अधिकांश अग्रेज उन्हे शहर का एक ही भाग समझते थे क्यों कि देखने में नेटिव-टाउन एक बड़े बाजार की तरह ही दिखता था। बीच बीच में कुछ प्रतिनिधी इमारतें बनी हुई थी जैसे कि एक मंदिर, एक मस्जिद, एक रेस्ट हाउस या एक जानवरों का दवाखाना। शहर की ट्रिस्ट गाइड्स मेस भी 'नेटिव टाउन' का उल्लेख 'एक सैर-सफरे वाले स्थान के तौर पर किया गया था। एक दौरा बाजारों को देखने का, नेटिव्स की भीड़ देखिये या फिर वहां जाए नेटिव्स के त्योहार देखिये'। इस कारण अंग्रेज लोग बाम्बे के इस बड़े भागों की जटिलताओं को समझते, पढ़ने या अनुभव करने में असमर्थ थे वे तो इन्हे सिर्फ सतही तौर पर ही जानते थे।

**मलाबार हिल और नामकरण की राजनीति :**

1860 के दशक तक मलाबार हिल अंग्रेजों और उच्चश्रेणी के भारतियों का प्रमुख निवास क्षेत्र बन गया। विशेष कर 1880 के दशक में जब भायकल्ला और परेल क्षेत्र में ओद्योगीकरण बढ़ने लगा तो मजबूर होकर अग्रेजों को वह क्षेत्र के छोड़ने को मजबूर होना पड़ा। बाम्बे के मलाबार हिल क्षेत्र के विषय में पुनर्नामकरण और भारतीय नामों का अग्रेजी करण इन दोनों के ही उदाहरण यहां प्राप्त होते है। जैसा कि हम पाल कार्टर की रचना -'आस्ट्रेलियन लैन्डस्केप' में पाते हैं कि किस प्रकार ब्रिटिश लोगों ने आस्ट्रेलियन क्षेत्रों के नाम रखते समय अक्सर वहां है की मूल भाषा के नामों का ही प्रयोग किया था। - मेरा तर्क है कि अग्रेजों ने बाम्बे के भूक्षेत्र का नक्शा बनाने ओर नियंत्रण रखने के लिये भारतीय नामों का ही उपयोग किया। मलाबार हिल क्षेत्र के नाम करणों के

तरीके विशेष तौर पर मजेदार थे क्यों कि अंग्रेज निवासियों को हिल के नियंत्रण के लिये दो प्राचीन हिन्दु मंदिरो' के उपासको ओर निवासियों से प्रतियोगिता करना पड़ी।

जेम्स डगलस (1826-1904) जो तीस साल तक बाम्बे कें एवसचेज-बिजनेस के ब्रोकर थे और बाम्बे पर लिखी बहुत सी पुस्रकों के लेखक थे ने, कम्बाल्ला हिल जो मलाबार जो श्रंखला का एक भाग है की उत्पत्ति पर चर्चा की है। बाम्बे के एक इतिहासकार सेम्युअल टी. शेप्पर्ड, जो समाचार पत्र 'दी टाईम्स आफ इंडिया' के संपादक थे ने एक पतली-पुस्तिका बाम्बे के नाम के नाम करणों पर प्रकाशित की थी जिसे इस प्रकरण कें विस्तृत रुप से सन्दर्भित किया गया है। शेप्पर्ड ने कम्बाल्ला शब्द की व्युपत्ति की दि विभिन्न व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं। प्रथम सर जेम्स मेकनेब्ब केम्पबेल (1847-1903) व्दारा दिया गया यह तर्क है कि कम्बाल्ला हिल नाम,प्रकरण बना है कमब्ल या कमल से, जिसे शिमिट,'ओडिना वोडियर भी कहा जाता है। शेप्पर्ड ने इस व्याख्या को इसलिये नकार दिया कि वहां उस स्थान में इस नाम का या इससे मिलते जुलते नाम की कोई वृक्ष उपलब्ध नहीं था। फिर उसने राव बहादुर पी. बी.जोशी काल उध्दारण दिया-' मेरी राय में कम्बाल्ला हिल का सही नाम खम्बाला हिल है। यहां के प्राचीन निवासी इसे खम्बाला टेकड़ी के नाम से जानते हैं। ये टेकड़ी खालिया टेंक के नजदीक है, जहां बाम्बे के ग्वाले अपने पशुओं को पानीपिलाने के लिये लाते। इस टेकडी पर पहले जंगल था और एक लम्बे अरसे से वहां खंभे गाड़े जाते थे। इसलिये इस स्थान को खंभालय या खम्बाला अर्थात खंभो का घर था स्थान कहा जाते लगा। अब ये खंभे क्या होते थे? कोई भी जो बाम्बे के पुराने निम्न वर्गीय हिन्दुओं की लोक-कथाओं और धार्मिक रीते रिवाजों से परिचिचत होंगे वे आपको बतलाएगें कि-मंदिर के पूर्वजों के भूतप्रेतों के लिये ये खंभे घर या आराम-स्थल थे।

इंगलिश न बोलने वाले नेटिव्स अक्सर इंगलिश शब्दों के अपने भारतीय उच्चारणों के व्दारा अंग्रेज लोगों के विनोद का कारण बनते थे तो वैसे ही अग्रेस भी भारतीय नामों का गलत उच्चारण करते थे और बोलने में उनका रुपांतरण इंगलिश लहजे में कर देते थे। जैसे कि विशेष रुप से जिन क्षेत्रों में अंग्रेज रहते थे उन्हे वहां का भारतीय नाम ही अंगीकार करके बोलना पड़ता था। तो उसे बोलते समय वे अपने विशेष इंगलिश-उच्चारण के कारण अक्सर नाम ही बदल डालते थे। जैसे कि खम्बाला का इंगलिश-कारण हुआ कम्बाला।'ख' अक्षर को इंगलिश में ठीक उच्चारण न कर सकते के कारण अंग्रेज उसे 'क' बोलते थे। ऐसा ही एक अन्य उदाहरण है बाम्बे के एक उपनगर 'बायकल्ला' का जहाँ अग्रेज लोग रहा करते थे। असल में मूल नाम था भायखला पर-'भ' और 'ख' के उच्चारण में कठिनाई के कारण'' चिट्ज पूगली'' नाम लिखा है जो वास्तव में हैं 'चिंच पोकली' है जिसका इंगलिश में अर्थ है टमरिंड, डेल (मराठी चिंच -टमरिड,मराठी पोकली-डेल) चिंच का मराठी उच्चारण करीब करीब चिंट्स जैसा ही है पर ऐसा अंदाज इंगलिश में पोकली के बारे में नहीं किया जा सकता।

पर अंग्रेजों के किसी नाम का अर्थ या सही उच्चारण शायद ही किसी मतलब का रहा हो जैसा कि पाल कार्टर ने कहा था वि।-नाम भले ही सही हो या न हो उसे लिपि बध्द कर नक्शे पर स्थित कर दिया गया और साथ ही उस का वर्णन कर दिया हो तो वह अर्थपूर्ण हो जाता है। कार्टर तर्क देता है कि कोई भी मूल भाषिक शब्द हो या वाल्कि आवाज हो उसने आरंभिक यात्रियों या खोजियों को आस्ट्रेलिया के भूक्षेत्र का नक्शा बनाने में मदत की थी। स्थानीय नामों के जरिये एक क्षेत्र की सीमाओं की पुष्टी अच्छी तरह से की जा सकती हैं। इसी तरह से भारतीय शब्दों या..... ध्वनियों ने अंग्रेजों की सहमता बाम्बे का नक्शा बनाने में की थी। कम्बाल्ला सब्द का सही उच्चारण और अर्थ की खोज करने का मतलब यह नहीं है कि उसके नाम को सही शब्द में बदल दिया जाए या वहां खम्भों का फिर से पुनर्स्थापित किया जाय पर उसका सम्बंध तो जानकारी के अधिकार से है। बाम्बे के स्थानों के

नामों पर एक पुस्तक लिखने से शेप्पर्ड उस विषय का 'अधिकारी' हो जाता है। जबकि स्थानीय सूचनादाताओं का उपयोग कम्बाल्ला का अर्थ जानने के लिये किया गया या पर इइस नाम का 'अधिकारी' तो शेप्पर्ड हो था जिसने उनसे इस नाम का अर्थ पूछा। किसी नाम का पत्ता लगाते का यह पाश्चात्य भू-एतिहासिक शोध का एक तरीका है। शोधकर्ता ही यह निर्णय करता है कि यह नाम सुरक्षित रखा जायगा या नहीं ओर यदि नहीं रका जायगा तो वह इसलिये कि वह सन्दर्भी व्दारा अधिकृत हैं।

कम्बाल्ला हिल के विषय में इसके नाम के इंगलिशी करण का प्रथम परिणाम तो यह हुआ कि इसका पुराना नाम और मूल अर्थ मिट गया। 1917 तक यहां के उच्चवर्गीय लोगों का इस हिलपट एकाधिकार हो गया और संभवत: उन्होंने अपने आवास वहां बनाये, जहां निम्न वर्गीय लोगों के खंभे स्थित थे। पुरानी पीढ़ी इसे खंबाला टेकडी (मराठी-टेकड़ी : हिल) के नाम से जानती थी, लेकिन ऐसा लगता है कि दूसरी पीढ़ी इसे उस नाम से नहीं जानती थी। दूसरा परिणाम यह था कि जबकि कम्बाल्ला हिल का इंगलिश में कोई मतलब नहीं था पर यह एक इंगलिश छाने जैसा तो लगता था और जो तब तक सही ओर सर्व-स्वीक्रत उच्चारण बन गया था। इस प्रकार कुछ तबकों में,जिनमें उच्च वर्ग के एंगलीसाइज्ड नेटिव्स भी शामिल थे कम्बाल्ला ओर बायकल्ला इन नामों के स्वीक्रत उच्चारण हो गये। अंग्रेजों व्दारा इस क्षेत्र के नामों को बदलने का यह एक तरीका था।

पर कम्बाल्ला हिल मलाबार हिल का एक भाग था, जिसका नाम डगलस ने निकाला था। मलाबार हिल का नामकरण विशेषकर स्वेच्छचारी था, क्योंकि मलाबार का समुद्री किनार तो बाम्बे से बहुत आगे दक्षिण में है। मलाबार हिल नाम का उल्लेख पहले पहल 1673 में फ्रायर ने किया था, जैसे कि ''बाम्बे व्दीप पर आने के केवल 11 साल बाद हमने उसे देखा। पर मलाबार क्यों ? मलाबारी समुद्र किनारा तो तब तक शुरू नहीं होता जबतक आय सुदूर दक्षिण में कुर्ग तक नहीं पहुँचते।' हमें शक होता है कि फेयर खुद इसके सूत्र का हवाला दे रहा हे। वह अपने वर्णन के अंत में एक तालाब का उल्लेख करता है। -यहाँ एक तालाव है जिसमें स्नान करने के लिये अधिकांश मलाबारी लोग आते हैं। यह एक तीर्थ स्थान है जहां बाम्बे के दक्षिणीय समुद्री किनारे से लोग आते हैं जिन्हे सामूहिक रुप से मलाबारी कहा जाता है''। -इसलिये यह मलाबार हिल है।

मलाबार हिल इस क्षेत्र का प्राचीन नाम नहीं था और यहां बाम्बे के पवित्रतम हिन्दू मन्दिर वालकेश्वर स्थित थे। डगलस ने लिखा है कि इस प्रमुख शीर्ष-स्थान की जामकारी पहले से भूविदों को थी, जिन्होने समुद्री किनारों के क्षेत्रों के 1853 के नक्शे में केप बोम्बइस नाम से इसे चिन्हाकिंत किया है, लेकिन इसका प्राचीनतम नाम वाल्केश्वर था।

वाल्केश्वर मंदिर मलाबार हिल के अग्रभाग पर गवर्नमेन्ट-हाउस से लगा हुआ स्थित था। गवर्नर का यह आवास जो औपनिवेशक शासन का अत्यधिक महत्वपूर्ण चिन्ह था, एक परम आदरणीय मंदिर ओर पवित्र स्थान के आमने सामने स्थित था। मुख्य सड़क से सीड़ियां उतरकर बाणगंगा सरोवर तक पहुँचा जा सकता था। सरोवर के वाहें ओर इस मंदिर सहिन अन्य अनेक मंदिर स्थित थे। धर्मशा लाएँ और निवास स्थान भी थे, जिन्हे मिलाकर वालकेश्वर गांव वसा था। यह एक बहुत पवित्र स्थान था। शिलाहार वंश के राजाओं के राज्य काल (810 से 1260 एडी) में उन्होंने इस स्थान का नाम श्री गुंडी रखा था। (तेलगु गुंडे, तमिल कुंडे: एक छिद्र,गड्ढा या पोल) -जिसका अर्थ 'भाग्यशाली पत्थर' होता था। यह एक असामान्य योनी के समान रुप के टीले पर रक्खी एक चट्टान थी जो स्त्री शत्कि का का चिन्ह मानी जाती थी। यह स्थान और मंदिर शीघ्र ही व्दीयके प्रमुख स्थान बन गये थे और कोंकण प्रदेश के लोगों का यह एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान बन गया था, तभी यहां इस क्षेत्र की प्राचीन तम सड़क बनी थी। श्रीगुंडी क्षेत्र की यात्रा करके आनेवाली तीर्थ यात्री मानते थे कि इससे उनका कायाकल्प हो गया है। जबकि इस

क्षेत्र का प्राचीन तम नाम श्री गुंडी था, कुछ समय बाद यहां के ब्राह्मनों ने मंदिर से एक कथा जोड़दी जिसके व्दारा इस स्थान का सम्बंध एक प्राचीन पौराणिक कथा से जुड़ गया ओर जिसके कारण इस क्षेत्र का नाम पड़ा वालकेश्वर। बाद में अंग्रेजो ने इस टीले और चट्टान को नाम दिया,' मलाबार पाइन्ट '। ( फिनार 1.3)

'वालकेश्वर' नाम रखते के लिये ब्राम्हणों ने इस पवित्र स्थान के स्थानीय इतिहास को जो एक प्राचीन धार्मिक कथा से सम्बंधित था को अपनाया। एक हल्की परंपरागत कथा को बहुत भारी परंपरा के रुप में प्रस्तुत किया गया। डॉ. जे. गरसन डा कुन्हा (1842-1900) एक प्रसिध्द पूर्वी भाषाओं के विव्दान और व्यवसाय से एक डाक्टर थे, जो गोवा से आफर बाम्बे में स्थापित हो गये थे ओर जिन्होंने बाद में बाम्बे का इतिहास लिखा था। उन्होनें वालकेश्वर शब्द की उत्पत्ति का पता लगाया था। डा कून्हा के अनुसार वालकेश्वर जिसे अब मलाबार हिल कहा जाता है, संस्कृत के दो शब्दों से बना है। वालुका अर्थात रेती और ईश्वर अर्थात भगवान, इसलिये वालकेश्वर से अभिक्रय है रेती के भगवान।

डा कून्हा ने एक 'यशवंत फोंडबा नायक दनाइता' का संदर्भ देते हुए बतलाया है कि एक प्राचीन संस्कृत पोथी - 'वालुकेश्वर महात्म्य' अर्थात वालुकेश्वर की महानता को उसने पढ़ा था। पोथी में इस मंदिर की यह कथा थी या यह ब्राह्मणों की व्याख्या थी एक पोराणिक कथा के अनुसार महागाथा रामायण के नायक श्री राम की पत्नी सीता को जब रावण हरण कर ले गया तो उनकी मुक्ति कराकर वापस लाने के लिये जब श्री राम अपने भाई लक्ष्मण के साथ श्रीलंका जा रहे थे तब उन्होंने यहां इस स्थान पर, जो अब वालकेश्वर कहलाता है, रेती का शिवलिंग बनाकर उसकी पूजा की थी। प्रभू राम के प्रथम म्लेच्छ या विदेशी आक्रमणकारी के दृष्टि में आते ही, समुद्र में कूद पड़ा था।

यदि 'वालकेश्वर मंदिर संकुल ओर गवर्नमेन्ट हाउस मलाबार हिल्स और कम्बाल्ला हिल्स के एक सिरे को चिन्हित करते हैं तो दूसरे सिरे को ब्रीच केन्डी के पश्चिम में स्थित महालक्ष्मी मंदिर चिन्हित करता है (फिग1-4) यह एक मजेदार बात है कि दोनों मंदिर अपनी गाथाओं में मुसलमान, पोर्तगीज और अंग्रेजी शासन की स्मृतियां संजोर हुए हैं') मूल कथाओं व्दारा ये मंदिर हमें यह पुनर्कल्पना कराते हैं कि प्राचीन बाम्बे के कई हिस्से पवित्र धार्मिक स्थल थे और जो युगों पूर्व की घटी हुई घटनाओं के गवाह थे। उदाहरण के लिये वालकेश्वर एक ऐसा स्थान है जहॉ प्रभू राम श्रीलंका को जाते समय यहॉ पर आये थे।-और सचमुच अन्य स्थल भी इसी प्रकार के दावे करते हैं।

महालक्ष्मी नाम दि शब्दों से बना है - महा अर्थात 'महान लक्ष्मी अर्थात संपन्नता यानि कि 'महान संपन्नता'। महालक्ष्मी मंदिर की स्तापना के विषय में जो कहानी है,वह दावा करती है कि हिन्दू देवी ने वास्तव में अग्रेजों की सहायता की थी। जब पहले पहल मुसलमान 14वीं शताब्दि में बाम्बे में आये थे तब तीनों देवियां वारली वर्ली में रहती थीं। वे अशुरू न हो जाएं इसलिये समुद्र में कूद पडी थीं। 1680 के बाद से अग्रेज लोग बंधारा बनाकर बाम्बे को वर्ली से जोड़ने के असफल प्रयत्न कर रहे थे। तब सौभाग्य से एक ठेकेदार रामजी शिवाजी जो इस काम में लगे थे, को सपने में आकर तीनों देवियों ने सूखी जमीन पर आने की अपनी इच्छा प्रकट की और कहा कि यदि ऐसा करोगें तो तुम्हे अपने काम में जरुर सफलता मिलेगी। तब सामजी ने जाल डलवा कर समुद्र में से तीनों देवियों की मूर्त्तियों को बाहर निकाला। रामजी ने यह घटना शासकों को बतलाई। अग्रेज शासकों ने मंदिर बनाने के लिये आवश्यक भूमि देखियों को दान करदी, परिणाम स्वरुप दोनों व्दीपों को आपस में जोड़ने में सफलता मिल गई। सिटी गजेटियर ने टिप्पणी की कि- ''मामा हाजियानी की मझार नजदीक होने से इस कथन की पुष्टी होती है कि मामा और महालक्ष्मी ने हाथ मिला लिये हैं या अन्य शब्दों में कहें कि मुस्लिम पीरों और हिन्दू देवी देवताओं की पुरानी दुश्मनी समाप्त हो गई है। जबकि हिन्दू दावा करते हैं कि उनकी देवीयों ने दोनों व्दीपों

को जोड़ने में अंग्रेजी की मदत की तो यह दावा भी पेश किया जाता है कि अंग्रेजों ने हिन्दू और मुसलमान दोनों के बीच के अंतर को दूर कस्के उन्हे आपस में जोड़ा था। यह दावा संभवत: अंग्रेजों के व्दारा ही पेश किया गया होता।

अंग्रेज सरकार और नगरपालिका के व्दारा मलाबार कम्बाल्ला हिल क्षेत्र को विभिन्न नामों से पुकारा जाता रहा है। 1864 में टाइम्स के अनुसार उस वर्ष महामहिम गवर्नरने कौन्सिल में बाम्बे के उप-विभागों ( क्षेत्रों) की व्याख्या करते हुउ ब्रीच केन्डी और मलाबार हिल का उल्लेख किया था। ये वही क्षेत्र हैं जिनकी हम चर्चा कर रहे थे। ब्रीच केन्डी के बारे में डी कून्हा का स्पष्टीकरण कुछ उलझा हुआ सा है। उनके अनुसार मलाबार हिल की दक्षिणी चोटी और कम्बाल्ला हिल की उत्तरी चोटी के बीच की दरार यानी 'बीच'। बाम्बे में ब्रीच शब्द 'अठ्ठारवीं' सदी के मध्य से चला आ रहा है और केन्डी भारतीय शब्द खिंड अर्थात दर्रा का अपभ्रंश है। यह परिणाम ऐसे ही एक अन्य उदाहरण से लिया गया है। पुणे शहर स्थित गणेश केन्डी के विषय में 1804 में जेम्स मेकिन्टोश ने स्पष्ट केया था मूल नाम 'गणेश खिंड' से कैसे गणेश केन्डी कहा जाने लगा। 1865 में नवीन प्रस्थापित नगर पालिका ने शहर को अनेक 'वार्डस' में विभाजित किया था, जिन्हे और आगे करारोपण की दृष्टि से सेक्शन्स में उपविभाजित किया गया। मलाबार हिल वार्ड (क्र. 8) के अंतर्गत वालकेश्वर ओर महालक्ष्मी के भाग शामिल थे। 1872 में फिर से क्षेत्रों का पुनर्विभाजन किया गया ओर डी डिवीजन / वार्ड डी के अंतर्गत चौपाटी, वालकेश्वर ओर महालक्ष्मी के भाग शामिल थे। काफी आगे चलकर 1917 में नगरपालिका ने वालकेश्वर ओर महालक्ष्मी को सूचि में शामिल किया ओर महालक्ष्मी तथा कम्बाल्ला हिल को वार्ड डी रुप में नही लिया गया। फिर भी 1909 के एक सरकारी प्रकाशन में हम नक्शे में प्रमुख रुप से चिन्हित किये गये है जैसे कि वे शहर के आफीशिमल भाग हों। (फिगर 1.2)नगर पालिका व्दारा विभागी करण ओर नाम करण भले ही कर दिया हो पर आम यूरोपियन तो इन स्थानों को मलाबार हिल, कम्बाल्ला हिल ओर ब्रीच केन्डी के नाम से ही जानते-पुकारते रहे। सर एडविन अरनोल्ड नाम के एक पत्रकार थे जो पहले कभी बाम्बे में रह चुके थे। 20 साल बाद जब वे बाम्बे वापस आये तो उन्होने ''बंगलों से चिन्हित मलाबार हिल की ऊँचीईयोंका हवाला दिया था।'' डब्लू . एस.कैने (1842-1900) एक अग्रेज राज नीतिज्ञ थे जो भारत में रुचि रखते थे उन्होंने यूरोपयिन-यात्रियों के लिये एक हेंडबुक लिखी थी जिसमें यह शिफरिश की थी कि - 'जब कभी आप सुवह या शाम को मलाबार हिल पर ड्राइव के लिये जाय तो अच्छा होगा कि आप वहां वालकेश्वर के मंदिर और सरोवर को देखें वहाँ ब्रीच केन्डी में भी मंदिरों का एक समुह है जो दर्शनीय है।

इस तरह, कैने की मान्यता है कि वालकेश्वर का हवाला मंदिर और सरोवर से है जो मलाबार हिल का हिस्सा था। यह ध्यान देने योग्य बात है कि मंदिरों के एक समूह की स्थित वह ब्रीच केन्डी में बतला रहा है न कि महालक्ष्मी में। यहां तक कि बाद में 1905-1906 में सिडनी लो नामकं लन्दन-स्टेनडर्ड का एक पत्रकार जो प्रिन्स आफ वेल्स और प्रिन्सेस के बाम्बे प्रवास में उनके साथ आया था। उसने भी इस क्षेत्र का मलाबार हिल और कम्बाल्ला हिल के नाम से सन्दर्भ दिया था।यद्यापि इस समय तक अंग्रेज लोगों को यह क्षेत्र छोड़ कर जाना पड़ रहा था और उनका स्थान धनिक नेटिव लेते जा रहे थे। 1896 में पहली बार प्लेग की महामारी ने बाम्बे पर आक्रमण किया, जिसके कारण भीड़ भरे क्षेत्रों में भारतीय बड़ी संख्या में प्लेग से मारे गये। उनकी तुलना में अंग्रेज जो खुले -अहातों में रहते थे अपोक्षकृत विनाश से बचे रहे। इस तथ्य को ध्यान में रखकर भारतीय धनिक- वर्ग बड़ी संख्या में इन खुले हुए क्षेत्रों में आने लगे। चूंकि उनके पास अधिक भूमि थी जिसके वे मालिक थे और उनके पास धन भी बहुत था, इसलिये अग्रेजों का वहां से जाने को विवश होना पड़ा। लो ने लिखा था कि- आज इसका परिणाम यह हुआ है कि मलाबार हिल और कम्बाल्ला हिल पर इंगलिश बंगले उंगलियों पर गिनने

लायक रह गये हैं। लगभग सभी उत्कृष्ट घरों पर नेटिव्स का कब्जा है और वे उनमें बड़ी शान से रह रहे हैं। अंग्रेजों को अपने प्रतिदिन के उपयोग के लिये यह महत्वपूर्ण था कि मलाबार हिल और कम्बाल्ला हिल नामों के स्थान पर नये स्थानापन्न नामों, वालकेश्वर और महालक्ष्मी का उपयोंग किया जाये क्यों कि ये दोनों नामनतो वृक्षों से निकले थे और न ही उन रिवाजों से निकले थे जो कि अब अस्तित्व में नहीं हैं। परन्तु ये सक्रीय रुप से उपयोग में आने वाले वे पवित्र स्थान थे, जहाँ .... साधुऔं ओर उपासकों का रोज ..... लगा रहता था और त्योहारों पर तो वे बहुत बड़ी सख्या में वहां आते थे। हिन्दुओं मे विशेष अवसरों पर धार्मिक जुल्स निकालने का रिवाज था, जो 'नेटिव टाउन' की दुनिया का एक हिस्सा थे। पर उनसे अंग्रेज लोग दूर ही रहना चाहते थे। यह एक अलग बात थी कि नेटिव टाउन में जरुर मोहर्रम के अवसर पर ताजियों का जुलूस देखा जाये, जैसा कि बहुत से पाश्चात्य लोंग करते थे, पर वह बिल्कुल दूसरी बात थी कि आपके दरवाजे के बाहर उनको आने दिया जाय। यहाँ तक कि पाश्चात्य रंग में रंगे भारतियों ने भी मलाबार हिल और कम्बाल्ला हिल इन नामों का प्रयोग किया और करना जारी रखा। ये नाम..... शहरी विभागों के सिर्फ भौगोलिक नाम नहीं थे वार्ल्क ब्रिटिश और उच्च वर्गीय भारतियों की, जो बंगलो से चिन्हित ऊँचाइयों पर रहते थे, के फेशनेबल एड्रेस और एक विशेष जीवन पध्दति के प्रतीक थे। ''मलाबार हिल''और ''कम्बाल्ला हिल'' नामों ने उन सीमाओं का काम किया था, जिन्होने ''वालकेश्वर'' और ''महालक्ष्मी'' की दुनिया और रिवाजों को,उनके किनारों और चरम - अंत को हदों में बांधेरखा था।

## भारतीय अनुवाद

भारतियों ने भी अग्रेजौ नामों के एवज में भारतीय नामों को रखा था। यह विशेषत: शहर के फोर्ट विभाग और उसके दरवाजे, मध्य की खुली जगह और उसके चारों ओर स्थित प्रमुख संस्थाओं के समूह को भारतीय नाम दिये गये थे। नाम राखते की इस प्रक्रिया मे भारतियों ने इन स्थानों और इमारतों के नामों का भाषांतर किया और उन्हे अपना बना लिया था।

शहर में नामोंका भारतीय अनुवाद भी एक नहीं था। बाम्बे में बहुत विविधता पूर्ण जनसंख्या थी और यहां अनेक भाषांए बोली जाती थीं। 1901 में मुंबई व्दीप पर बोली जाने वाली पांच प्रमुख भाषाएँ थीं; मराठी,गुजराती, हिन्दुस्तानी,कच्छी और इंगलिश, भी अक्सर एक से अधिक प्रकार की होती हैं जिसके कारण एक ही शब्द की अनेक स्पेलिन्गस पायी जाती हैं।

## अंग्रेजों के शहर के भारतीय नाम

बाम्बे शब्द की उत्पत्ति हिन्दुओं और पुर्तगालियों के बीच एक विवादास्पद मामला था। 1852 में एक पर्यवेक्षक ने लिखा था कि, शहर का देशीनाम 'मुंबई' था, जो उनकी देवी 'बोम्बा या मोम्बा देवी' से निकला था - दूसरी ओर पोर्तगीज का दावा था कि व्दीप का नाम बाम्बे, उनके प्रथम गवर्नर के हवाले से रखा गया था, जिसने बंदरगाह कौ सुन्दरता और सुरक्षा पर अपनी टिप्पणी करते हुए कहा था - 'बोम बहिआ ( पुर्तगाली: अच्छी खाड़ी) बाम्बे के तत्कालीन व्दीप पर फोर्ट (किला) बनाया गया था और बहुत से लोगों लिये 1874 में फोर्ट ही बाम्बे था। डा कुन्हा के अनुसार - कुलाबा,वालुकेश्वर और मजगांव में रहने वाले नेटिव्स, यहां तक कि हमारे समय में भी एक परंपरागत आदत के अनुसार कहते थे कि वे बाम्बे (अर्थात फोर्ट) जा रहे हैं, जो कि आजकाल के लेखक को अनर्थक ही महसूस होगा।

पारसी समाज के तथा बाम्बे के एक प्रमुख नागरिक सर दीनशा वाचा ने नेटिव द्रष्टिकोण से बाम्बे के महत्वपूर्ण स्मरण लिखे हैं। 19वीं शताब्दि में, पारसी लोग बड़ी संख्या में उतरी फोर्ट और वाचा पाइंट्स में रहते थे। ये उन बहुत से नामों में से थे जो फोर्ट का वर्णन करते समय प्रयुक्त होते थे। 1150 के दशक में और बाद में 1914 - 15 तक जिन्हे लगभग भुला दिया गया था। भारतीय फोर्ट को कोट (संस्कृत : फोर्ट) या किल्ला (फारसी : अरबी : फोर्ट) के

नामों से जानते थे। जो चारो ओर से चूर (खाई संभवत: संस्कृत मोट) से घिरा हुआ था। दरवाजे रात को बंद कर दिये जाते थे। कोट फोर्ट की सीमा परिभाषित करता था, साथ ही अंदर क्या है यह बतलाता था। जबकि कोट बाहर या भारकोट (संस्कृत भार बाहर : आउटसाइड,विदाउट) वह क्षेत्र था जो कोट के बाहर था। कोट और बाहर कोट शहर के इन प्राथमिक दो उप-विभागों की कल्पना करने का एक तरीका भी था। एक अन्य पारसी डा. जाल एफ. बलसारा ने पारसी धार्मिक इमारतों का हवाला दिया है कि शहर में फोर्ट या कोट के अंदर और इधर उधर और बाहर कोट क्षेत्र। - 1973 में लिखा यह हवाला बतलाता है कि वे पुराने नाम वर्तमान समय में भी अस्तित्व में हैं। यह संभव है किये शब्द पारसियों व्दारा बहुत सामान्यत: से प्रयोग किये जाते हों पर उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर इसे सिध्द नहीं किया जा सकता।

फोर्ट के बाहर एस पलांडे या मैदान (फारसी में खुला मैदान या लड़ई का मैदान) फैला हुआ है। एस पलांडे शहर के एक अलग विभाग का नाम था। सिटी गजेटियर में उल्लेख है -एसपलांडे विभाग,जैसा कि उसके नाम से जाहिर होता है, पुराने मैदान का वर्तमान प्रतिनिधि है। जिसमें फ्रेयर के अनुसार - गाय और भैसें चरती थीं। मैदान नाम तो स्थिर बना रहा और एसपलांडे के भाग अब आजाद मैदान और क्रास मैदान के नाम से जाने जाते है।

फोर्ट के तीन दरवाजों के नाम भारतीयों के अपने नाम थे। चर्चगेट और चर्चगेट स्ट्रीट के नाम प्रोटेस्टेन्टस् के सेन्ट जमस के थेड्रल के नाम पर पड़े थे, यह बाम्बेग्रीन के आसपास एक अत्यधिक महत्वपूर्ण इमारत थी। बाद में एक स्टेशन और उसके आसपास के स्थान का नाम चर्चगेट रखा गया। भारतीय इस गेट को पवनचक्की गेट कहते थे। इस प्रकार चर्च का संदर्भ बदल गया। ऐसा इसलिये कहा गया क्यों कि अठ्ठारवीं शताब्दि में वहाँ एक पवनचक्की (विन्ड-मिल) लगी हुई थी। यह नाम जीवन की प्रतिदिन की चर्चा के निमित भी रखा गया था। बाम्बे के एक नागरिक डा. जीवानी जमशेद मोदी ने अपने बचपन की एक यादगार में कहा कि पवन चक्की पर जाने का मतलब था, दरवाजे के बाहर हवा खाने के लिये जाना।

फोर्ट के केन्द्र में ग्रीन स्थित था जिसे विभिन्न समूहों के लोगों व्दारा विभिन्न नामों से जाना जाता था। ( फिगर 1.5) 1863 तक इमारतों का एक घेरा उसके चारों ओर बन गया था जिसका नाम रखा गया ''एलफिन्स्टन सर्किल''। उन्नीसवीं सर्दी के मध्य में, यह फोर्ट में रहने वाले पारसी लड़के लड़कियों के लिये एक जनप्रिय मनोरंजन- मैदान था। ये गुजराती भाषी बच्चे इस खेल के मैदान को चकरी ( गुजराती : सर्किल) कहते थे क्योंकि यह गोल घुमावदार था। एलफिन्सट्न सर्किल को बैलगाड़ी चालक 'आमली आगल' कहते थे। या इमली के सामने ( गुजराती आमली ; इमली ; गुजराती आगल; सामने) यह नाम केथेड्रल के उत्तर -पूर्व में स्थित एक पुराने इमली के वृक्ष के हवाले से रखा गया था। ध्यान रखें, बाम्बे में बोली जाने वाली भाषाएँ वहाँ के नामों में प्रतिबिम्बित होती थीं। इमली को मराठी में चिंच कहते हैं और गुजराती में आमली। पहली का प्रयोग चिंच पोकली नामकरण में हुआ और दूसरी का ''आमली आगल में''।

वाचा ने बतलाया था कि ग्रीन के सामने की ओर टाउन हाल और केथेड्रल ये दो फोर्ट की सर्वाधिक महत्वपूर्ण इमारतें थीं जिन्हे टोइडल और देवल (मराठी: मंदिर) भी क्रमश: कहा जाता था। टोंडल 'टाउन-हाल' का भारतीय उच्चारण था।जबकि देवल देवालय (देवालय: संस्कृत मंदिर) का अपभ्रंश शब्द था। देवल शब्द मराठी में अधिक आम थौर पर प्रयोग किया जाता है केथेड्रल को देवल के रुप में देखना, एक ऐसा भाजीय सांस्कृतिक तरीका कि जिसके व्दारा वे एक क्रश्चियन संस्था के अर्थ को समझकर उसे अपना बना लेते हैं।

शहर में अंग्रेजों व्दारा लगाई गई प्रतिमाओं की भारतीयों ने अपने हिसाब से पुनर्व्याख्या करली थी। एक आरंभिक प्रतिमा लार्ड कोर्नवालिस की थी जो एलफिन्स्टन सर्किल पर

लगाई गई थी, जिस एक मंदिर की तरह ही देखा जाता था और लोग उसे छोटा देवल (मंदिर) कहते थे। यह एक ऐसा हवाला था जो सामने ही स्थित के थेड्रल के विरुध्द जाता था। नेटिव्स उसकी पूजा करते थे, यह अंग्रेजों के लिये बड़े विस्मय की बात थी।

''एलफिन्सस्टन सर्किल में स्थित कार्नवालिस का यह एक बहुत बड़िया स्मारक है। जब भी आय वहां जा आगे तो खुली हुई पुस्तक पर पुष्प रखे हुए पाओगे या प्रतिमा के गले में पुष्प हार पड़े होंगे। यह कोई नया रिवाज नहीं है। 1825 में नेटिव्स को लगा कि यह कोई धार्मिक पूजा स्थल हैं और इसलिये वे इसे छोटा देवल कहकर पुकारने लगे। सरकार ने इसे रोकने की कोशिस की और देशी भाषा में सूचना पत्र भी जारी किये कि यह एक गलती है, पर उसका कोई असर नहीं हुआ। क्यों कि एक बार नेटिव्स के मन में जी बात बैठ गई तो उसे आसानी से निकाला नहीं जा सकता था।

भौतिक या जो धार्मिक न हों ऐसी प्रतिमाएँ भारत के शहरी वातावरण में एक नया अजूबा था। तो कदाचित ही यह आश्चर्य जनक था कि इन आकृतियों को देवताओं की समझ लिया गया। यद्यपि ये प्रतिमाएँ भारतीय लोगों को मोहित अवशय करती रहीं पर डगलस की यह भविष्य-वाणी कि नेटिव लोग प्रिन्स आफ वेल्स की घोड़े पर सकर प्रतिमा की पूजा-भक्ति करते रहेगें, पूर्ण नहीं हुई। इसके बजारा हुआ यह कि राजकुमार की जगह घोड़े के नाम पर, एक जगह का अनौपचारिक नाम.....गया।

''भारत वासियों व्दारा अंग्रेज लोगों के विषय में दिव्यता की भावना एक अद्भूत विषय है। मैं यह निश्चितता के साथ कह सकता हूं कि सर अलर्ब्ट ससून व्दारा निर्मित घोड़े पर सवार प्रिन्स आफ वेल्स की प्रतिमा की पूजा नेटिव्स दूसरी पीड़ी तक करेगें। उस प्रतिमा की ओर आप दिन में लगभग किसी भी समय, जब चाहे देखिये तो आप पाएंगे कि लोगों का समूह उसकी ओर टकटकी लगा कर देख रहा है। वे लोग यह जानने की बड़ी कोशिस करते हैं कि रानी की प्रतिमा सफेद (संगमरमर की) क्यों है और राजकुमार की काली (ब्रोज की) क्यों है।''

प्रतिमा का अनावरण1879 में एक प्रमुख स्थान, रेम्पर्टरो ओर फोरबेस स्ट्रीट के जंक्शन पर, साउथ फोर्ट की सीमा पर हुआ।( फिगर 1.6) ओर बाद में 1965 में उसे विक्टोरिया गार्डन ( अ. ब.'वीर माता जीजा बाई भोंसले उधान') में स्थानांतरित कर दिया गया। यह वह समय था जब शहर में अंग्रेजो व्दारा स्थापित प्रतिमाओं को विनष्ट किया जा रहा था। फिर भी वह स्थल अभी भी अपने बोलचाल के पुराने नाम - काला घोंडा से ही जाना जाता है। काला घोड़ा यानि कि 'ब्लेक हार्स '-अब यहां प्रति वर्ष एक 'कालाघोड़ा कला महोत्सव' का आयोजन किया जाता है।1999 में उस अक्सर पर एक 'ईवेन्ट' भी शामिल की गई जिसे 'काला घोड़ा हेरिटेज वाक' कहते हैं। यह पदयात्रा कालाघोड़ा क्षेत्र के आस - पड़ोस में की जाती है। उस काल में, जिसकी चर्चा हो रही है, बाम्बे में राजकुल की प्रतिमांए थोड़ी संख्या में ही थी और निसन्देह ब्रिटिश लोग चाहते थे कि भारतीय लोग उनके राजकुमार की इस (रंग) समानता से प्रभावित हों। पर 'काला घोड़ा' नाम से तो यही प्रकट होता है कि भारतीयों का आकर्षण प्रतिमा और उसके घोड़े के रंग के प्रति था न कि उसके रागकिल के सम्बंध से, जिसकी कि नामकरण करने में पूर्ण उपेक्षा कर दी गई।

**नामो के ऊपर संघर्ष और कल्पित स्थानों की शक्ति :**

अंग्रेजों की अपेक्षा भारतीयों ने शहर की कल्पना कहीं अधिक जटिल तरीकों से की। उनके लिये नेटिव टाउन एक विशाल अंतर रहित, शहर का अकेला विभाग नहीं था वल्कि यह अपनी विशेषताओं से युत्क विभिन्न विभागों में बंटा हुआ था। उदाहरण के लिये 19 वीं शताब्दि के अंत में नाचने वाली लड़कियां खेतवाड़ी में पायी जाती थीं और वैश्याएँ कमाठी पुरा में। तालाब, मंदिर, पवित्र तीर्थ-प्रतिमाएँ और मस्जिदें बाम्बे के सम्पूर्ण भूक्षेत्र में फैल हुए थे,और उनके व्दारा अपने पड़ोसी-क्षेत्रों की ऐसी व्याख्या होती थी कि जिससे शहर को

जानने के लिये एक वैकल्पिक ढ़ाचा बन जाता था। यह विकल्प शहर के सरकारी विभागीकरण के प्रति होता था। उदाहरण के लिये बाम्बे में गामदेवी मंदिर के आस पास के क्षेत्र को भी गामदेवी कहा जाता था। बाम्बे में कुछ नाम उन भूतकालीन दादगारों को सुरक्षित रखते हैं जो गुजर चुकी है। उदाहरण के लिये कुछ स्थानों के नाम पानी के तालाबों के नाम पर रखे गये थे। वे नाम तो अभी भी चालू हैं जब कि उन तालाबों को पूरे जाने के बाद 80 से अधिक साल गुजर चुके हैं। आज भी बाम्बे में कोई भी व्यत्कि किसी टेक्सी ड्रायवर को यह निर्देश देता है कि उसे सी पी टेंक लेचले तो वहां ले जाता है जबकि कावसजी पटेल टेंक कभी का पूरा जा चुका है।

अंग्रेजों ने जब 1661 में इस व्दीप का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया तो उसके बाद आस पास के प्रदेशों महाराष्ट्र और गुजरात से बड़ी संख्या में विभिन्न जातियों और समाजों के लोग बाम्बे आगये। अंग्रेज सरकार व्दारा धार्मिक उपासना की स्वतंत्रता और व्यापार की सुरक्षा के वायदे इस आगमन के महत्वपूर्ण कारण थे। विशेष जाति-समाज और सम्प्रदाय एवं क्षेत्र से आए हुए लोंग यहां शहर में एक दूसरे के समीय रहना चाहते थे। एक समान तुलनात्मक आय और वर्ग वाले समूह और सामान्यत: एक ही धंधे में लगे लोग,एक साथ जड़े रहना चाहते थे, विशेषता व्यापारिक कारणों से यद्यपि कोई एक जाति या समूह किसी व्यापार विशेष को हमेशा नियंत्रित करती नहीं रह सकती, इस कारण से समान व्यापार करने वाली अन्य जातियां भी वहां पड़ोस में रहने आजाती थीं।अक्सर शहर के ऐसे क्षेत्र बाहर से आए हु उस समूह उस समूह विशेष के लोगों के लिये वतन की तरह काम करते हैं और वे ऐसा तब भी करते हैं जब कि वे लोग उस स्थान में रहना बंद कर चुके होते हैं। एडवर्डस ने लिखा था कि -''सेमुअल स्ट्रीट'' और इजरायल मोहल्ला बेने - इजरायल लोगों के अधिकार में था। बाम्बे में मेरे फील्डवर्क के दौरान मैने पाया कि वहां अब इजरायली नहीं रहते पर वहाँ सेमुअल स्ट्रीट में, शहर के सबसे पुराने सिनेगाग में बहुत से पुराने इजरायली अभी भी आकर मिला करते हैं। उन्होंने मुझे इजरायली मोहल्ला के बारे में बतलाया, जिसके एक चौथाई भाग में इजरायली रहते थे और उनके इतिहास की एक पुस्तक के बारे में बतलाया जिसमें इस क्षेत्र, जिसकी सड़को के नाम 'बेने इजरायलीज' पर रखे गये थे, के फोटोग्राफ्स और टिप्पणियां दी गयी थी।''

बाहर से आये लोगों का ऐसा एक अन्य समूह भाटिया हिन्दू लोगों का था जो गुजरात से आकर यहां बसे थे और जिन्होंने इस शहर के व्यापार में प्रमुख भाग लिया था। वाचा ने उत्तरी फोर्ट के उस विभाग का वर्णन दिया है जिसे भाट्टिया-बाड़ कहा जाता था। उन्नीसवीं शताब्दि के उत्तरार्ध में धनवान भाट्टिया लोग वहां रहते थे। वाड का मराठी में अर्थ होता है एक कांटेदार झाड़ियों का घेरा, एक परकोटा,शहर का एकप्रभाग, एक बस्ती। औपनिवेशक-नक्शे में भाट्टिया वाड का उल्लेख नहीं है।

यहाँ पर महत्वपूर्ण यह है कि बाहर से आनेवाला समाज यहां शहर में अपना स्वयं का एक स्थान बना लेता है, जिसके अस्तित्व में होने की कम से कम कल्पना की जा सकती है। ऐसा स्थान दीवारों और दरवाजों जैसे भौतिक ढ़ांचों के बिना ही अपनी सीमा रेखाओं का निर्माण कर लेता है। इसे भले ही सरकारी मान्यता नहीं मिलती फिर भी यह निर्माण किसी भी प्रकार से एक वास्तविक और शक्तिशाली निर्माण से कम नहीं होता। ऐसा भाट्टिया बाग के मामले में देखा जा चुरा है। (फारसी बाग : उपवन) जिसका सरकारी नाम था 'बाजार स्ट्रीट गार्डन'। वाचा भाट्टिया बाग का सनदर्भ फोर्ट स्ट्रीट में देता है ऐसा इसलिये कहा जाता था क्यों कि संपूर्ण दक्षिणी भाग में भाट्टिया जनसंख्या अधिक प्रामुख्य से थी। जबकि जो बाग है उसकी निर्मित 60 के दशक के अंतिम भाग मे हुई थी।

गायत्री स्थीवाक की मार्गदर्शिका 'मेजरिंग सायलेन्सेज' के अनुसरण में - 'कालो नियल रिकार्ड्स में डाटा' ; उस विधि का एक भाग है जो मैने इस अध्याय में उपयोग की है और भाट्टिया बाग का मामला उस विधि का एक उदाहरण

है। ऐसा लगता है कि भाट्टिया बाग उस स्थल का गैर सरकारी नाम था और एक ऐसा नाम था जिसे मान्य करने के लिये अधिकारियों को विवश होना पड़ा। 1914-15 की नगर पालिका रिपोर्ट में उल्लेख है कि बागार गेट गार्डन (भाट्टिया बाग) की पुनर्रचना का काम इस वर्ष, जिसकी कि यह रिपोर्ट है, आरंभ हुआ। पहले की नगरपालिका रिपोर्टस् में इसका उल्लेख सिर्फ बाजार गेट गार्डन नाम से ही किया जाता रहा था। लेकिन ऐसा लगता है कि इसका सर्वधा एक नया नाम रखते से पहले सारकार इसके गैर सरकारी नाम को भी मान्यता दे रही थी। नगर पालिका रिपोर्ट 1916-17 में गार्डन का उल्लेख करते हुए लिखा है कि,''भाट्टिया बाग गार्डन (अब जिसका नाम विक्टोरिया- स्क्वायर है) में पौथ रोप दी गई है ओर (मध्य में ताड़ वृक्षों के समूह लगा दिये गये हैं।

यह एक रोचक संदर्भ है कि शेप्पर्ड ने अपने 'प्लेस नेम्स' में भाट्टिया बाग को तो सूचिबध्द किया था पर वह यह बताने से चूक गया कि ''बाजार -गेट गार्डन'' उसका पहले का सरकारी नाम था पर यह सुझाव दिया है कि यह नाम पहले नाम की ही तरह अधिर सामान्यता से जाना जाता था। शेप्पर्ड ने मे 1917 के टाइम्स आफ इंडिया का संदर्भ दिया है, जिसमें कहा गया है कि स्क्वायर का नाम प्रत्यक्ष रुप से 'विक्टोरिया टर्मिनस' ( दी ग्राँड विक्टोरियन गोथिक रेल्वे स्टेशन) के नाम पर पड़ा है और चूंकि यह स्थान वहां का सीमा क्षेत्र है इसलिये उसे नया नाम दिया गया है। आगे टाइम्स इस की आलोचना करते हुए चेतावनी देता है कि, ''नगर पालिका आयोग को किसी भी प्रकार से इस बात को दोषी नहीं ठहराया जा सकता कि उसने सुझाए गये और भी बहुत से नामों पर विचार किये बिना ही यह निर्णय ले लिया है। उन्होने एकस्थान का नाम जान बूझ कर इसलिये मिट दिया कि वह आकार में छोटा है, न कि इसलिये कि वह एतिहासिक हिल में है। जैसा कि हमारे कलकत्ते के संवाददाता ने एक पत्र में लिखा है, जिसे हमने कल प्रकाशित किया था, कि - ''अक्सर होता ऐसा है कि एक क्षेत्र या स्थान का नाम यदि किसी सड़क से न जुड़ा हुआ हो तो उसे मिटा दिया जाने का खतरा रहता है।

शायद भाट्टिया लोगों को इस बात का अंदेशा था कि 'भाट्टिया बाग' नाम मिटने के साथ उनके मोहल्ले का नाम भी मिट जाएगा। 1913 में भाट्टिया -मित्र मंडल ( समाज के एक संघटन ने) नगर पालिका व्दारा बाग के पुनर्नाम करण का विरोध प्रदर्शित किया। मंगला पुरंदरे अनुसार उनके विरोध प्रदर्शन के जबाब में कार्पोरेशन ने फिर पुनर्नामकरण के विरुध्द निर्णय ले लिया। - पर यह विवरण पूरी तरह सही नहीं है क्यों कि 1917 में इस बाग का नाम बदलकर विक्टोरिया स्क्वायर कर दिया गया था। यह कहना अधिक ठीक होगा कि बाद में सरकार ने अपने निर्णय को उलट दिया था।1926 के कलेक्टर के नक्शे में इसका नाम 'भाट्टिया बाग' ही दिखलाया गया हैं।

बाम्बे में 'भाट्टिया' बाग का मामला उनथोड़े से विवादों में से एक था जो नाम को लेकर हुए थे। ऐसा शायद इसलिये था कि, सरकारी नामों के बावजूद जनता के विभिन्न तबके उन्हे अन्य नामों से जानते थे और उनका बाम्बे का नक्शा और उसके भाग भी नगरपालिका के नामों से बिल्कुल अलग पढ़े जाते थें। नाम कभी कभी एक नक्शे के लिये चाबी की तरह होते हैं, शहर को भिन्न तरह से पढ़ने केलिये आपको इस विशेष ज्ञान की समझ होना चाहिये। उदाहरण के लिये 'भाट्टिया वाड' नाम की जानकारी आपको उस स्थानके विभागों और उनकी सीमाओं की पुनर्कल्पना और क्षेत्र का अध्ययन करने के योग्य बनाती है। भाट्या लोगों की स्थानीय संस्थाएँ उस क्षेत्र का ढ़ॉचा बनती है। उत्तरी फोर्ट में इन संस्थाओं में एक पूजा स्थल भी शामिल था जिसमें पूजा-अर्चना के लिये अन्य हिन्दू समूह भी आते थे। जिसका नाम था ''श्री गोवर्धन नाथ जी की हवेली'', जिसका निर्माण लगभग 1892 में मोदी स्ट्रीट पर किया गया था और एक अस्थायी चिचकत्सालय भी था 'दी भाट्टिया प्लेग हास्पिटल' जो 1896 में तब स्थापित हुआ था जब बाम्बें में प्लेग की महामारी का प्रकोच हुआ था।

## ''पैत्रिक घरों'' के साथ व्यवहार

बाम्बे के मूल नागरिकों के अपने गुप्त भेद हुआ करते थे और उनकी ऐसी दुनियाएं थीं कि जिनमें इन गुप्त भेदों को जाने बिना धुस पैंठ नहीं हो सकती थी, लेकिन बाम्बे के औपनिवेशक पोलिस बल जो शहर की जानकारी और उसके नियंत्रण के प्रति उत्तरदायी था, पर यह दबाब था कि वे बाम्बे के इन वैकल्पिक नामों और दुनियाओं कि जाने और उन्हे मान्यता दें। एस एम एडवर्डस ने अपनी रचना 'हिस्ट्री आफ दी बाम्बे सिटी पोलिस' में 1909 से 1916 के बीच जब वह पोलिस कमिश्नर रहे थे, प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले मोहर्रम की धूमधाम का वर्णन किया है। कई वर्षों तक इस धूम धाम में अक्सर खून खराबा भी हो जाता था। इस आयोजन की केन्द्रीय इकाई मोहल्ला होता था और हर मोहल्ला अपने ताजिया ओर ताबूत को बनाने संवारने के लिये पैसे इकव्दे करता था। एडवर्ड्स के शब्दों में - ''हरेक ताबूत के साथ लगी हुई और गहां भी ताबूत जुलुस की शकल में ले जाया जाये वहां वहां साथ जाने वाली एक टिली ( सेवकों का दल) होती थी। कई मामलों में यह टोलियां धीरे धीरे बड़ी होती गई और उनके सदस्यों की संस्था बहुत अधिक हो गई। उदाहरण के लिये रिपनरोड (मदन पुरा) के जुलाही बुनकरों की टोली जिसमें दो हजार से तीन हजार तक सेवक टोली मै शामिल होते थे। सभी लोग लुहांगा लगी लाठियों से हथियार बंद होते थे। इसी तरह से बदनाम रंगन मोहल्ला ( अब्दुल रहमान स्ट्रीट), हलाइ मेमन मोहल्ला, कोलसा मोहल्ला, और चूना भट्टी का मोहल्ला आदि के साथ भी कई हजारों सेवकों की भीड़ होती थी।

एडवर्डस व्दारा प्रयुत्क शब्द मोहल्ला फारसी भाषा का है जिसका अर्थ होता है एक सड़क,वार्डया कस्बे का एक भाग। इनमें से अधिकांश मोहल्लों को उनमें रहने वाली बिरादरी विशेष से भी पहचान जाता था। जैसे कि हलाई मेमन बिरादरी के साथ हलाई मेमन मोहल्ला। झगडे भी मोहल्लों और बिरादरियों के बीच होते थे। यहॉ एडवर्डस कुछ ऐसे मोहल्लों की सही स्थिति बतलाता है जिनके सरकारी और गैर सरकारी नामों का उसने मिलान किया था। अब्दुल रहमान स्ट्रीट एक महत्वपूर्ण सड़क थी, जिसके अनेक विभाग थे, जी भारतियों व्दारा अनेक नामों से जाने जाने थे। उनमें से एक था रंगारी मोहल्ला या रंगरेज गली। मदन या मादू एक मुसलमान जुलाही या बुनकर जाति का व्यक्ति था। यह जाति यहां इस भाग में, जो रिपन रोड की सीमा बताता है, मिलती थी। नगरपालिका की रिपोर्टस में कोलसा मोहल्ला उदाहरण के लिये कोलसा स्ट्रीट कहा गया है, लेकिन जैसा कि रिपोर्ट में दी गई स्थानों की सूचि में हलाई मेमन मोहल्ला का नाम है, उसका आफी शियल रकार्पस में कोई उल्लेख नहीं मिलता। यह एक सड़क नहीं थी वल्कि भाट्टिया वाड की तरह एक रिहायशी स्थान था। शायद हम कभी इस मोहल्ले की स्थिति और सीमाएँ नही जान सकेगें।

एस. एम. एडवर्डस जैसे सिविल सर्वेन्ट्स जो सरकार की ओर से शहर का प्रशासन चलाते ते थे, और म्युनिसिपल-कार्पोरेशन, मिलिट्री,पोलिस और बाम्बे ट्रस्ट जैसी संस्थाओं का प्रशासन करते थे की द्रष्टि सें अधिकांश युरोपियन - दर्शकों की अपेक्षा शहर का कहीं अधिक जटिल चित्र होता था। जैसा कि हम लोलिस के एक उदाहरण से जान सकते हैं।

समाज या जाति के नेता लोग औपनिवेशक सरकार और अपने समाजों के बीचकी एक महत्वपूर्ण कड़ी होते थे। आरंभ में 1672 में गेराल्ड औंगियर बाम्बे के एक महत्वपूर्ण और शुरुवाती गवर्नर थे, उन्होंने बाम्बे निवासी समाजों और जातियों के लिये पंचायतों या परामर्श सभाओं की स्थापना की थी। जातियों के नेताओं को पंचायतों के लिये चुना जाता था। पंचायते जातियों के कामकाज नियमन करती थीं, आंतरिक झगड़ो को मिटाती थीइ और अपनी आंतरिक सरकार चलाती थीं जो अपने सदस्यों के ठीक चाल चलते के लिये कायदे कानून बनाती थीं। अनेक समाजों में प्रमुख मुखिया हुआा करते थे। ये प्रमुख अपने समाज के प्रभाव पूर्ण व्यक्ति होते थे

और अपने समाज की समस्याओं को सरकार के सामने रखते समय समाज का प्रतिनिधित्व करते थे, फिर चाहे वह कोई विवाद हो या प्रार्थना पत्र हो। सेन्सस के आंकड़े एकत्र करते समय, एस. एम.एडवर्डस को किसी एक प्रसिधद जाति के मुखिया से, और एक अन्य प्रभाव पूर्ण व्यक्ति से, सेन्सस-स्टाफ और स्थानीय जनता के बीच मध्यस्थता करने की अपील करना पड़ी थी।

कुछ ब्रिटिश अधिकारी जैसे कि एस. एम. एडवर्डस स्थानीय समाजों या उनके कुछ तबकों के प्रति सहानुभूति रखते थे और कुछ मामलों में तो उन्होंने समाज के पक्ष में सरकार से मध्यस्थता की थी। जबकि औपनिवेशकसरकार, अपने अधिकारियों को अपनी योजनाओं और नीतियों को अंदर से विरोध की बहुत कम इजाजत देती थी। इसका एक अच्छा उदाहरण है सिटी आफ बाम्बे इम्पुवमेन्ट ट्रस्ट की स्कीम नं. सेन्डहर्स्ट रोड से क्राफर्ट मार्केट रोड स्ट्रीट स्कीम, इसके अंतर्गत इन दोनों पांइट्स के बीच में एक 100 फूट चौड़ी सड़क का निर्माण शहर के पूर्वी भाग में करना था। इम्पुवमेनट ट्रस्ट की स्थापना शहर में सुधार करने और विशेषकर 1896 में फैली बूबोनिक-प्लेग की महामारी के बाद शहर में सफाई सम्बंधी सुधार करने के लिये की गई थी। 19जून 1911 को, सुन्नी मुसलमानों की एक जाति मेमन के 30 नेताओं के एक शिष्ट मंडल ने जेम्स ओ ई प्रेसीडेन्ट, सिटी आफ बाम्बे इम्पुवमेन्ट ट्रस्ट से भेंट की और उपरोक्त स्कीम के कारण मेमन लोगों पर आने वाली कठिनाइयों का विगृण देते हुए स्कीम पर पुनर्विचार करने का निवेदन किया। उनहोंने कहा कि-इस स्कीम की सड़क का एक छटवां भाग मेमन मोहल्ले से गुजरने वाला है, जिसके लिये वहाँ की जमीन सरकार अधिक्रत करेगी, परिणाम स्वरुप हमारी कुछ जमातें एक दूसरे से दूर से हो जाएगीं। एक तरह से यह हमारे रिवाजों में दखल अंदाजी है क्यों कि रिवाजों के अनुसार हमारे सभी सदस्यों को एक परिवार की तरह रहना जरुरी हैं। मेमन नेताओं का एक छोटा गुट एस. एम. एडवर्डस जो कि तत्कालीन पोलिस कमिश्नर थै, से भी मिला। उसने इस गुट से कहा कि-हालांकि वह पूरी तरह से इस योजना के पक्ष में है पर उसे उनकी कंठिनाइयों से भी सहानुभूति है। और उसने कायदा किया कि वह उनकी ओर से उनका पक्ष सेकार के सामने रखेगा। उसने सरकार को भैजे अपने निवेदन में स्पष्ट किया कि यद्यपि इस मामले में हस्तक्षेप करने का उसे कोई अधिकार नहीं है और बावजूद इसके कि मेमन लोग अजीब लोग हैं और समय पर उन्होने उसे तकलीफ भी दी हैं जैसे कि मोहर्रस के अक्सरों पर लेकिन फिर भी जाने क्यों वह उन्हे पसंद करता है। उसने आगे लिखा कि प्रस्तावित सड़क की स्कीम के कारण मेमन समाज में काफी रोष व्यारत हैं, क्योंकि बाम्बे स्थित उनके पैत्रिक घरों के दिलों को चीर कर यह सड़क वहां से गुजरेगी। मेमन समाज के सामाजिक रीति रिवाजों से परिचित होने के कारण एडवड्सने एक असाधारण कदम उठाया, उसने सरकार को एक आफीशियल -रिपोर्ट भेजी, जिसमें मेमन समाज का इतिहास उनके सामाजिक रीति-रिवाज उनकी संस्थाएं और मेमन वाडा में उनकी जीवन शैली आदि का विराण था। यदि स्कीम के कारण वे विस्थापित होते हैं, तो वह यह आश्वासन चाहता था कि समाज के सदस्यों को पुनस्थापित करने के हर प्रयत्न किये जायगें जिनसे कि उनकी खोई हुई पारपारिक और सामाजिक जिन्दगी फिर से निर्मित की जा सकेगी।

इस स्कीम ने बहुत विवाद उत्पन्न किया और जनता का बहुत अधिक ध्यान आकर्षित किया। इस स्कीम को बनाने वाले मि. ओई ने ईपने एक भाषण में यह स्वीकार किया कि स्कीम के प्रकाशित होने से पहले उन्हे यह कल्पना नहीं थी कि इससे कितनी संख्या में मेमन लोग प्रभावित होगें। इस स्कीम के कारण मेमन लोगों के मोहल्ले का एक हिस्सा ले लेने से उनके खास सामाजिक रीति-रिवाजों को उसे पहुँचेगी और उन्हे कठिनाई होगी, इस बात से मि.ओई अनोखी कठिनाइयों में फंस गये। इन कठिनाइयों को दूर कर देने की द्रष्टि से उन्होंने इस मामले पर अधिक और से पुनर्विचार करने का

निर्णय लिया। हालांकि मेमन लोगों ने समस्या को जितना बतलाया था वह उतनी गंभीर नही निकली। मेमन मोहल्ले के उस भाग में जहां से सड़क गुजरने वाली थी लगभग 10,000 लोग रहते थे। उसके केवल (और केवल) एक चौथाई लोग अर्थात लगभग 2,500 लोग ही प्रभावित होने वाले थे। इन लोगों के पुनर्वास के लिये पर्याप्त जमीन, मेमन मोहल्ले के पास ही उपलब्ध थी। मि-ओई ने निर्णय लिया कि साफ-सफाई की द्रष्टि से भी उन लोगों के लिये पड़ोस की जमीन में आवास बनाने अधिक लाभद्राद होंगे। मेमन लोगों के लिये बुरे में से बहुत कुछ अच्छा नतीजा निकलेगा।

सरकार के इन तर्कों और द्रष्टिकोण के कारण एडवर्डस को शीघ्र ही स्कीम के बारे सरकार की स्थिती सही होने का विश्वास तो हो गया पर फिर भी वह इस तथ्य के प्रति संवेदन शील रहा कि सड़क मेमन लोगों के पैत्रिक घरों ( बाम्बे में) के दिलों के बीच से गुजरने वाली थी और वह सरकार से लगातार प्रार्थना करता रहा कि वह मेमन लोगों का भरसक भला करे। यद्यपि भारतियों के प्रति औपनिवेशक अंग्रेजों की विभिन्न प्रकार की भावताएँ थी, पर एडवर्ड्स उनमें से था जो भारतियों के प्रति अत्यधिक सहानुभूति रखते थे। वह मेमन लोगों को प्यार से अजीब लोग कहता है जबकि एक दूसरा औपनिवेशक अधिकारी उन्हें अनजान बोहरा (शिया मुसलमानों का एक समूह) -बतलाता है और मानता है कि उनका विरोध प्रमुखता से अपने स्वार्थ के लिये है। इस मामले में सरकारी अधिकारी बाम्बे में एक ऐसी विषय परिस्थिती में काम कर रहे थे जहॉ इस सड़क से कोई न कोई तो प्रभावित होने ही वाला था। ओ ई को एडवर्डस के विपरीत मेमन लोगों व्दार अपने सामाजिक रिवाजों को बताए रखने के लिये जा रहे विरोध प्रदर्शन में कोई रुचि नहीं थी और न ही उसे उनके पैत्रक घरों की जानकारी थी और न ही मेमन वाडा की अखंडता बनाए रखने से ...भी उसे कोई लाभ था। उसे तो बस चाहिये थी उसकी चौड़ी सड़क और अधिक महत्व की बात यह थी कि यह स्कीम अन्य विकल्पों से कम खर्चीली थी। जनगणना के आंकड़ो व्दारा उसने पता लगाया कि स्कीम के व्दारा प्रभावित होनेवाला वह क्षेत्र, जिसका प्रतिनिधित्व मेमन लोग कर रहे थे, हालांकि वह मेमन वाडा के नाम से जाना जाता था पर उसमें बहुत कम संख्या में मेमन लोग रह रहे थे और मेमन लोगों का वास्तविक निवास क्षेत्र मेमन वाडा के दक्षिण में स्थित था। यह एक ऐसा तर्क था, जिसे ओ ई ने अपनी स्कीम के पक्ष में प्रस्तुत किया और यह हल तो अन्य सभी समाधानों से सस्ता था और न ही उससे किसी जाति-समाज को नुक्सान पहुँचाने वाला था, जैसा कि इस स्कीम ने पूर्व में इतनी निष्ठुरता से किया था।

### पुराने और नये शहरी विभागों के बीच संघर्ष

1661 में अग्रेजों ने पुर्तगा लियों से, व्दीपों के एक समूह का अधिकार प्राप्त किया था, जिन्हे उन्होंने बाँधो व्दारा परस्पर जोड़ दिया और रिक्लेमेशन्स व्दारा विस्तृत करके आनेवाली शताब्दियों में 'आयलैण्ड आफ बाम्बे' का निमार्ण किया। (फिगर 1.5) बांधो पर से जाने वाले उॅचे रास्तों -'काजवेज' और बांधो की श्रंखलाओं ने व्दीपों के बीच के अंतरों को भर दिया और समय के साथ उनके बीच की जमीन 'रिक्लेस' (पुन: प्राप्त) कर ली गइ। उसी समय व्दीप के किनारों को अनुक्रम से भरकर रिक्लेमेशन व्दारा व्दपि का और अधिक विस्तार हुआ, विशेष करके पूर्व में, कोलाबा से सिवरी तक। हार्नबी वेलार्ड (पुल) ने महालक्ष्मी और वर्ली के बीच के बहुत बड़े अंतर को जोड़ा दिया, विलिमय हार्नबी (1771 से 1784 के मध्य बाम्बे के गवर्नर थे) ने इस वेलार्ड को बनवाकर पूरा किया, हालांकि इस अंतर को पाटने का काम सत्रहवीं शताबिके अंत से ही शुरु हो गया था। एक बार यह वेलार्ड जब पूरा हो गया तो व्दीप के मध्यभाग और फ्लेट्स (इस क्षेत्र का तत्कालीन नाम) का रिक्लेमेशन शुरु हो गया, यह प्रक्रिया उन्नीसवीं शताब्दि तक चलती रही। बहुत बाद तक 1850 में भी क्लार्क रोड से महालक्ष्मी के बीच की सारी भूमि साल के अधिकांश समय मे दलदल बनी रहती थी। बाम्बे का एक प्लान 1812-16 तक का यह बतलाता है कि यह क्षेत्र वर्षाकाल में पानी के नीचे चला जाता था, जैसा कि नक्शें में चिन्हित किया गया हैं।

(फिगर 1.8) कोलाबा काजवे का निर्माण कार्य 1835 में शुरु हुआ था जिसके व्दारा बाम्बे व्दीप दक्षिणी व्दीप कोलाबा से जोड़ा गया।

इन व्दीपों के मच्छीमार गांवों, मंदिरों,वृक्षों, खाड़ियों और पहाड़ियों के नामों पर शहर के विभागों के नामरखे गये थे, जो आज भी उपयोग में आ रहे हैं। 1673 तक आकर, जब बाम्बे का इंगलिश गवर्नर गेराल्ड आंगलेर था, सात व्दीप घटकर केवल चार रह गये। वे थे 1.कोलाबा या ओल्ड व्मन्स आयलैन्ड 2. पामग्रोव आफ बाम्बे, मजगांव, परेल, माटुंगा, सायन और धारावी 3. माहिम और 4. वर्ली या वरली (फिगर 1.5)- इन व्दीपों के कुछ भाग समय पर समुद्र के पानी से भर जाते थे। अंग्रेज लोग कों के अठारहवीं और आरंभिक उन्नासवीं सदी के बाम्बे के प्रमुख वर्णनों में विशेषत: कोलाब, फोर्ट, एस पलांडे, मलबार हिल, मजगांव, परेल, माहिम और वर्ली का ही वर्णन प्रामुख से होता है। कभी कभी उन गावों का भी संदर्भ होता है जैसे कि सायन, सिवरी, और वालकेश्वर जहाँ बाद में शहर के प्रशासकीय-विभाग उन्ही नामों से स्थापित किये गये। उपनिवेशीय शासन व्दारा फोर्ट, मलाबार हिल, रिक्लेमेशन्स और सड़कों के नामों को छोड़कर शहर के शष सभी विभागों में हिन्दुस्तानी नाम न कि यूरोपियन नाम, ही प्रयोग में लाये गये।

औपनिवेशक अधिकारियों के पुराने शब्द कोष में, 1727 में बाम्बे में, दो कस्बे शामिल थे बाम्बे और माहिम और 8 गांव मजगांव,वरली,परेल, वडाला, नायगाव, माटुंगा, धारावी और कोलाबा ; सात छोटे खेड़े - दो वडाला के अंतर्गत, दो धारावी के अंतर्गत और तीन परेल के अंतर्गत, इसमें 5 कोली बस्तियां थी, कोली मछुआरे थे और व्दीप के प्राचीन तम निवासी थे। टाउन को कस्बा भी कहा जाता है जो कि अरबी शब्द है, जिसका अर्थ है जिले का प्रमुख शहर। जैसा कि 18वी शती के एक संदर्भ से जाहिर होता है कि- बाम्बे टाउन या कस्बे का सालाता लगान अंदाजन एक्स. 30.424 था। 'आयलैन्ड आफ बाम्बे' से संदभित होता है 7 मूल व्दीपों को जोड़कर बनाया हुआ आयलैन्ड। बाम्बे का वर्णन अक्सर टाउन या आयलैन्ड कहकर किसा जाता है उदाहरण के लिये 1901 की बाम्बे की जनगणना रिपोर्ट में लिखा था कि - ''बाम्बे (टाउन और आयलैन्ड)'' ..... गजेटियर आफ बाम्बे सिटी'' की (तीन जिल्दों में)जो एडवर्डस व्दारा संकलित की गई थी और 1909 और 1910 में प्रकाशित हुई थी, में अंतत: कस्बा शब्द को हटा कर शहर (सिटी) शब्द का प्रयोग किया जाने लगा था।

'टाउन' शब्द का प्रयोग अक्सर बाम्बे के अन्य भागों के नाम रखते में भी किया जाता रहा था। 1775 में पारसन्स नाम के यात्री के अनुसार बाम्बे फोर्ट के अंदर का क्षेत्र बाम्बे कस्बा था। उसी वर्ष ''ओरिएन्टल मेमोयर्सड़' का लेखक फारबेस, फोर्ट के अदर एक 'ब्लेक टाउन' का उल्लेख करता है जिसमें बाजार भी थे। जबकि पारसन्स ने बाम्बे के शहरीक्रत भाग की,जो कि फोर्ट था की समता टाउन से की है। फारबेस फोर्ट के अदर के एक प्रभाग का उल्लेख एक अलग टाउन के रुप में करता है। 18वीं सदी में बेक बे के समुद्री किनारे एक ऐसा क्षेत्र विकसित हुआ था जिसे मेडागास्कर टाउन कहते थे। वह थोड़े समय के लिये गुलामों के ठहरने का स्थान था। इन गुलामो को मेडागास्कर से लगभग 1736 से आयात किया जाता था और यह व्यापार करीब 40 सालों तक जारी रहा। हम जानते हैं कि विशेष कर 1803 के बाद एसपलांडे के उस पार एक ब्लेक टाउन या नेटिव टाउन विकसित हुआ था। उधर एडवर्डस ने टाउन शब्द का उपयोग तेजीसे बढ़ते हुए शहरीकरण के लिये किया है। न केवल फोर्ट में जमीन का स्वरुप बदल रहा था वल्कि शहर धीरे धीरे रिक्लेम किये हुए ऊँचे मैदानों पर धीरे धीरे रंगती हुआ बढ़ रहा था, पश्चिम की ओर बेकबे के किनारे किनारे और बाय कल्ला के उत्तर की ओर के क्षेत्र में विस्तार के कारण 1835 तक नये संचार माधयम निर्मित करना अनिवार्य हो गया था।

1864 में टाइम्स ने सूचना दी कि हिज एक्सी लेन्सी गवर्नर महोदय ने कौन्सिल में बाम्बे के आकार और सीमाओं

का उल्लेख करते हुए बतलाया था कि-बाम्बे व्दीप और कोलाबा और ओल्ड व्मन्स आयलैण्ड को निम्न क्षेत्रों में उपविभाजित किया गया था - कोलाबा, फोर्ट, मांडवी और बंडेर्स, भूलेश्वर, ब्रिच केन्डी, मलाबार हिल, कमाठीपुरा, मजगोन माउंट, चिंचपोकली, वर्ली,माहिम वूड्स और माटुंगा। 1865 में नगरपालिका स्थापित होने के बाद नगरपालिका के कमिश्नर ने शहर को 10 वार्डस में बांटा था। मांडवी और उमरखाडी और उनके आस पास के क्षेत्र को दी ओल्ड टाउन कहा जाता था और वह क्षेत्र जो वहॉ से विस्तारित होकर बायकल्ला तक आता था - दी न्यू टाउन कहलाता था। यह स्पष्ट नही है कि इन नामों का प्रयोग आम जनता भी करती थी। यह बात मामले को और भी गंभीर बनाती है कि जो कभी न्यू बाम्बे नाम से जाना जाता था और जिसके अंतर्गत शासकीय इमारतों की कतारों वाला ग्रेन्ड वुलवर्ड, क्षेत्र था, जो एलफिन्स्टन कालेज और ट्रचर एंड कम्पनी की इमारत के बीच का क्षेत्र और जो 1860, में फोर्ट की दीवारें ढहा देने के बाद निर्मित हुआ था, उसे अब फ्रेरे टाउन कहा जाने वाला था। सर बार्टले फ्रेरे बाम्बे के एक प्रभावशाली गवर्नर थे, जिन्होंने इस स्कीम की कल्पना की थी और उसे शुरु किया था। इन्ही के नाम पर इसका नाम प्रेरे टाउन रखा जाने वाला था।

बाम्बे के भूक्षेत्र के आरपार,दक्षिण से उत्तर और पूर्व से पश्चिम की ओर रेंगता हुआ टाउन जैसे जैसे आगे बढ़ा तो उसे पुराने ग्रामीण ठिकानों का सामना करना पड़ा, उसने या तो उन्हे घेर लिया या दर किनार कर दिया। व्दीप के मध्य में स्थित कावेल,एक ऐसा ही गांव था (फिगर 1.5) एसपलाण्डे के उत्तरी किनारे पर स्थित यह गांव एक समय में इस सारे क्षेत्र में फैला हुआा था जो 19वीं सदी का अत आते आते कावेल खास और पुरानी हनुमान लेन में कालवा देवी रोड के व्दारा बंट गया था। एक समय में इस पूरे गाव में कोली लोग बसे हए थे, जिनका धर्म परिवर्तग पुर्तगालियों व्दारा रोमन केथोलिक धर्म में कर दिया गया था। कावेल नाम के विषय में ऐसा समझा जाता है कि वह इसके मूल नाम कोल वाड़ या कोली वस्ती का पुर्तगालियों व्दार किया गया अपभ्रंश था। या फिर पुर्तगाली शब्द कापेला या चेपल का अपभ्रंश था शेप्पर्ड ने इस सम्बंध में लिखा था कि -1917 तक गोअन्स, ( गोआ क्षेत्र का एक समाज, गोआ पुर्तगाली शासन मे था) कावेल गांव को 'कावेल चर्च' से जोड़ते थे। यह चर्च 'नोस्सा सेन होरा डी साउडे' ( अवर लेडी आफ हेल्थ) के नाम से जाना जाता था और1974 में या इससे भी पहले एक फेमिली चर्च के रुप में निर्मित हुआ था। कावेल स्ट्रीट क्षेत्र का नेटिव नाम ''गायवाड़ी था''। गाय स्त्रीलिंग शब्द है इसके लिये वाड़ी जो वाड़ा का स्त्रीलिंग शब्द है उसके साथ जोड़ा गया था। वाडा अर्थात आवास। शेप्पर्ड की राय में यह नाम इसलिये रखा गया था कि यहां गौ का मांस बिकता था और 1917 में भी यहां इस क्षेत्र में गाय का मांस बेचने वाली एक दो दुकानें मौजूद थीं। दूसरा वैकल्पिक स्पष्टी करण उसने यह दिया कि यहां गाय रखी जाती थीं।

कावेल शब्द का सही अर्थ क्या है यह महत्वपूर्ण नही है। सार्थक बात तो यह है कि दो विरोधी औ~परस्पर उलझै हुए इतिहास इस नाम से जुड़े हुए थे, - एक तरफ तो कोली और दूसरी तरफ पोर्तगीज और केथोलक चर्च। गाय शब्द हिन्दी, मराठी और गुजराती में एक ही अर्थ रखता है और गायवाडी का उपयोग विभिन्न जातियों ने किया होगा। फिर भी मैं इस नाम को एक टिप्पणी के बतौर पढूंगा, यह टिप्पणी गोमांस न खाने वाले समाज, हिन्दू समाज की गोमांस बेंचने और खाने के रिवाज वाले समूहों के प्रति होगी। गरसन डा कून्हा गो अन था। उसने 1860 में प्रथम बार कावेल की यात्रा की थी। उस समय में वह व्दीप के रोमन केथोलिक समाज का केन्द्र था जहाँ हर वर्ष अतिरित्क लोग बसीन, सालसेट, दमन और गोआ से बाम्बे आते थे, वे यहां क्लार्क और घरेलु नौकरों का काम करते थे। बीसवीं सदी के आरंभ में एक सरकारी प्रकाशन में लिखा था कि - ''गोआनीज और नेटिव क्रश्चियन्स कावेल से पूरी तरह से जुड़े हुए हैं। कावेल जो प्राचीनतम रोमन केथोलिक धर्म परिवर्तित लोगों का पुराना

घर था''। पर यह बात पूरी तरह सच नहीं थी। डा कून्हा उन्नीसवीं सदी के अंत मे सरवेद लिखता है कि - 'कावेल जो एक समय में पोर्तगीज क्रश्चियन धर्म परिवर्तित लोगों का स्थान था और जहां वे लोग बडी संख्या में बसे हु थे। काफी लम्बे समय से उनपर आक्रमण होता रहा और पूरी तरह से अपने धन की ताकत से बनिया समाज ने अब पूरे स्थान पर कब्जा जमा लिया है।'' बतिया एक हिन्दू जाते है जो प्रमुखता से व्यापारी है। पर कावेल पर कब्जा जमाने वाले सिर्फ बनिया ही नहीं थे वल्कि भाट्टिया लोग भी थे दूसरी व्यापार करने वाली शक्तिशाली हिन्दू जाति है। कोली और रोमन कथोलिक लोगों को विस्थापित कर ये लिंग बड़ी संख्या में यहां चले आये थे। कोली और रोमन केथोलिक्स जिन्हे डा कून्हा बाम्बे के प्राचीनतम ग्रामीण निवासी बतलाता है। हम देख चुके हैं कि 1913 में भाट्टिया लोगों ने भाट्टिया बाग नाम के लिये आन्दोलन किया था। फिर भी यहां के भूक्षेत्र का रुपातंरण करते में उन्होनें सहायता की। बगीयों और क्रासों सहित छोटे छोटे हवादार भवनों के स्थान पर बहुत से घर जो अंधेरे और हवी रहित थे निर्मित हो गये।

कावेल बहुत समय पहले दर किनार हो चुका था।1872 में जब नगरपालिका ने बार्डस को विभागों में बांटा तो कावेल दो भागों में बंट गया, बी वार्ड और सी वार्ड धोबी तलाव और मार्केट। में समय के साथ वह दो बड़े रास्तों के बीच में सिकुड़ गया, कालबादेवी रोड और गिरगाम रोड के मध्य में और ऐतिहासिक कावेल क्षेत्र अब धोबी तलाव भाग में स्थित है, ऐसा समझा जाता है। मार्केट, तीन कपड़ा बाजारो के लिये प्रसिध्द है, जो उस क्षेत्र में स्थित थे। पर शायद यह बाम्बे के प्राचीनतम ग्राम वासियों के लिये एक ऐसा संकेत था कि, इस व्दीप का शासक देवता पैसा और बाजार है और उसके लिये उन्हे रास्ता देना ही होगा।

## उपसंहार

1909 में सरकार ने एक ऐसी नीति को लागू करना शुरु किया जो आने वाले 20 वर्षों में शहर के विकास पर असर डालने वाली थी। पश्चिमी समुद्री किनारे धनिक वर्गो के लिये आरक्षित कर दिये जानेवाले थे। इस नीति के परिणाम आज हमें स्पष्ट दिखलाई दे हैं कि पश्चिमी और पूर्वी किनारे वर्ग श्रेणियों के अनुसार बंटे हुए हैं।

जबकि सरकार को शहर के आफीशियली, स्वीक्रत विभागों के नाम रखने और सीमाबन्दी करने के अधिकार थे, शहर के निवासियों, ब्रिटिश और भारतीय दोनों ही ने शहर की व्यवस्था अन्य तरीकों से की थी। अंग्रेजों ने शहर का वर्णन अनगिनत विवरणों में प्रस्तुत किया है पर चूंकि व प्रचलित उपनिवेशवादी संस्कृति के पक्षपाती थे इसकारण उनका शहर के साथ सम्बंध प्रतिबंधित ही रहा। भारतियों व्दारा शहर को समझने के उनके वैकल्पिक तरीकों का जिसमें उन्होंने अनेक ढॉचों का उपयोग किया जैसे कि मंदिर, चर्च, मस्जिद, तालाब, प्रतिमाएँ और आस पड़ोस आदि। भारतियों में इनके प्रति स्वामित्व के भाव थे उन्हे अपने शहर की अंदरुनी पहचान थी इसलिये इनके नामकरण में उन्होंने रचनात्मक भूमिका निभाई। परन्तु ये नाम आफीशियल विचार विमर्श के भाग नहीं थे इसलिये ये या तो शीघ्र मिट गये या भुला दिये गये, उपेक्षित हो गये या अधिकारियों व्दारा उनके दूसरे नाम रख दिये गये। औपनिवेशक शासन की शाई और अधिकार और ब्रिटिश निवासियों की जानकारी की पध्दति ने उन्हे आश्वस्त किया था कि उनके व्दारा चुने हुए नाम हमेशा अस्तित्व में बने रहेगें। - - - लेकिन फिर भी काला घोड़ा की प्रतिमा के नाम रखने की शक्ति की अपनी एक विरासत दे गये हैं, विरासत कल्पना की, उपयोगिता की और यादगार की।

***संदर्भ :***

1) देखें दीपनकर गुप्ता नेटिविज्स इन एं मेट्रोपोलिस : दी शिवसेना इन बाम्बे ( न्यूदेहली : मनोहर पब्लिकेशन्स, 1982), 39-69 शिवसेना आंदोलन के आंरभ के विषय में सूचना। शिवसेना आंदोलन कार्टूनिस्ट बाल ठाकरे के करामाती नेतृत्व में 1966 में, बाम्बे में, आफीशियली शुरु हुआ। 1950,के अंतिम वर्षों में ठाकरे ने स्वंय के

कार्टून साप्ताहिक मार्मिक का प्रकाशन शुरु किया, जिसका उसने अपनी विचार-धारा के प्रचार के लिये उपयोग किया। विशेष कर इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि शहर में आनेवाले नान महाराष्ट्रीयन लोगों व्दारा महाराष्ट्रियन लोगों के जाब्स और आर्थिक अवसर छीने गा रहे हैं। आरंभ में दक्षिण भारतियों को निशाना बनाया गया। फिर इसने लगातार अन्य राज्योंसे आनेवाले लोगों और मुसलमानों पर भी आक्रमण किये। शिवसेना का अर्थ है, शिवाजी की सेना। शिवाजी 17 वीं शताब्दि के महाराष्ट्र के वीर राजा थे। एक भाषीय महाराष्ट्र राज्य जिसकी राजधानी बाम्बे है, पांच वर्षों के आन्दोलन के बाद 1960 में स्थापित हुआ था। यह राज्य पूर्व के व्दिभाषीय प्रदेशों महाराष्ट्र और गुजरात क्षेत्रों में से निर्मित किया गया था।

2) नौजेर भरुचा,'मूव टू रिनेम खोदाद सर्किल शाक्स रेसीडेन्ट्स' टाइम्स आफ इंडिया ( मुंबई), 27 मार्च 1998 पृ.1
3) जेम्स मेकेंन्जी मेक्लीन 'ए गाइड टू बाम्बे : हिस्टोरीकल स्टेटिस्टीकल एंड डिस्क्रिप्टिव, 5 ''एड. ( बाम्बे गजट स्टीम प्रेस,1880) 224-25
4) दी गजेटियर आफ बाम्बे सिटी एंड आयलेणड,3 जिल्दे. एस. एम.एडवर्ड्स व्दारा संकलित ( बाम्बे 'टाइम्स प्रेस' 1909-10, 2 ( 1909) :120 ( उसके बाद का नाम- सिटी गजेटियर)
5) सिटी गजेटियर 2: 110-112
6) हेन्ड बुक आफ दी बाम्बे प्रेसीडेन्सी विथ एन अकाउइट आफ बाम्बे सिटी,2 एड. ( लंडन जोन मुर्रे,1881) 138.
7) जेम्स डगलस, ए बुक आफ बाम्बे ( बाम्बे : बाम्बे गजट स्टीम प्रेस :-1883) 178
8) मीरा कोसाम्बी, बाम्बे इन ट्रांजीशन : दी ग्रोथ एंड सोशल इकालाजी आफ ए कालोनियल सिटी. 1880-1980 (स्टाक होम,स्वीडन अलमाक्विस्ट एंड विकसेल इंटरनेशनल 1986)43. 9. लाइफ इन बाम्बे एंड दी नेणरिंग आउट स्टेशन्स ( लंदन : रिचार्ड बेन्टले 1852) 243,248.
10) एस. एम. एडवर्ड्स, सेन्सस आफ इंडिया 1901 वाल्. 10 बाम्बे ( टाउन एंड आय लेण्ड), पार्ट 4, हिस्ट्री (बाम्बे :'टाइम्स आफ इंडिया' प्रेस 1901),103-104 (हियर आफ्टर साइटेड एज सेन्सस 1901,वोल. 10 पार्ट 4)
11) डगलस,ए बुक. 183, सिटी गजेटियर 2:111
12) 'ओआर्ट मीन्स 'ए कोकोनट गार्डन' -यह पोर्तगीज शब्द ओटा या होर्टा का अपभ्रंश है। ओआर्ट शब्द पश्चिम भारत में प्रयुक्त होता है। इस विषय पर और अधिक सामग्री के लिये कृपया देखें सेम्युअल टी. शेप्पर्ड की 'बाम्बे प्लेस नेम्स एंड स्ट्रीट नेम्स, एन एक्सकर्सन इनटू दी बाइवेज आफ दी हिस्ट्री आफ बाम्बे सिटी ( बाम्बे : दी टाइम्स प्रेस 1917),12.
13) एडवर्ड्स, सेन्सस 1901, वोल. 10 पार्ट 4 : 104
14) ई बिड,117 एशियाटिक जरनल, में-अगस्ट 1838मे, एक हुमनाम लेखक का संदर्भ
15) मेकलीन, गाईड टू बाम्बे 91880),243
16) ईबिड,251
17) श्रीमती पोस्टन्स ( मेरीआन्ने यंग, दूसरा नाम) वेस्टर्न इंडिया इन 1838.2 वाल्यूम्स (लंदन : सांडेर्स एंड ओट्टे 1839),1:12
18) ईबिड 1:14,25; 48-49
19) देखें पाल कार्टर, दी रोड टू बोटानी बे: एन एक्सप्लोरेशन आफ लेण्डसकेप एंड हिस्ट्री ( शिकागो : यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस,1989)
20) आर पी. कर करिया.इडी. दी चार्य आफ बाम्बे : एन एंथोलोजी आफ राइटिंग्स इन प्रेज आफ दी फर्स्ट सिटी इन इंडिया( बाम्बे: डी. बी.तारापुर वाला, सन्स एंड कं. 1915) 572-73 : जेम्स डगंलस,साउंड एबाउट बाम्बे

( बाम्बे : दी गजेट स्टीम प्रेस 1886), 65-66

21) ''बाम्बे की इतनी सारी सड़को के नाम इंगलिश सरनामों पर क्यों रखे गये'' ? यह जानने की उत्सुकता के कारण शेप्पर्ड ने इस खोज-योजना की शुरुवात की थी। उसने कुछ अन्य लेखकों के लेखों से उधार लिया है, यह इसे वह मुक्तकंठ से स्वीकार करता है, वह उनका नाम भी देता है और यह भी बतलाता है कि उसने विव्दातों की राय भी ली है, जिनमें राव बहादुर पी. बी.जोशी भी शामिल हैं। जोशी ने 'बाम्बे सिटी गजेटियर' को भी सामग्री प्रदान की थी और स्वयं भी ''हिन्दू पीरियड इन ही सेन्सस रिपोर्ट'' पर शोध की थी, जिसके आधार पर 'हिस्ट्री आफ बाम्बे लिखा गया। जोशी ब्राह्मण जाति के हिन्दू थे पर अनेक बारे में अधिक कुछ ज्ञात नहीं है सिवाय इसके कि उन्हे उनकी विशेष सेवाओं के लिये ब्रिटिश सरकार ने राव बहादुर की पदवी से सम्मातित किया था। आर.पी करकरिया जो, 'एन एंथोलाजी आफ राइटिंग्स आम बाम्बे' टाइटिल - दी चार्म आफ बाम्बे' के संपादक थे ने भी शेप्पर्ड की सहायता की थी। जिन सड़को के नामों का उद्गम संदेहपूर्ण होता तो वे शेप्पर्ड के साथ वहां जाकर खाजब्रीन में उसकी सहायता करते थे। शप्पर्ड ने अपनी शोध की विधी का स्पष्टीकरण देते हुए बतलाया है कि, जब किसी स्थान के उदगम के बारे में एक ही सिध्दान्त होता था तो उसने उसके सोर्स का नकम नहीं दिया। केवल तभी, जबकि दो या अधिक परस्पर विरोधी विशेषज्ञ होते तो उनके नाम का उल्लेख किया है। देखे शेप्पर्ड, बाम्बे प्लेस.प्रीफेस, देखें - सिटी गजेटियर,1:प्रीफेस,1-111,एडवर्ड्स, सेन्सस 1901 वाल्यूम 10 पार्ट 4 : इनट्रोडक्टरी नोट।

22) सर जोसेफ मेकनाब्ब केम्पबेल,बाम्बे गजेटियर, वाल्यूम 26. पार्ट 3,(प्रकाशन सूचना नामालुम),595 कोटेड इन शेप्पर्ड, बाम्बे प्लेस .55.केम्पबेल का कम्बाइलेशन आफ मटेरियल्स आन बाम्बे, उपलब्ध है बाम्बे गजेटियर में वाल्यूम 26 पार्टस 1.3,

23) जोशी संदर्भित, शेप्पर्ड, बाम्बे प्लेस, 55 में

24) इसपर टीका के लिये देखें मिसेज पोस्टन, वेस्टर्न इंडिया 1:141 - 142

25) कार्टर, दी रोड. 329

26) ईबिड,328

27) अंग्रेजों ने भी इसी तरह शहरों के नाम बदले, पश्चिमी भारत के पुणे शहर का नाम पूना किया था।

28) डगलस - राउन्ड एबाउट 65-66.डगलस जोन फ्रेयर का संदर्भ दे रहा है,ए न्यू अकाउंट आफ ईस्ट इंडीया एंड परशिया इन ऐट लेटर्स, नौ वर्षो की यात्रांए 1672 में आरंभ हुई और 1681 में समाप्त हुई ( लंदन चिसवेल 1698)

29) डगलस, राउंड एबाउट. 67

30) एडवर्ड्स सेन्सस 1901 वाल्यूम 10 पार्ट 4:8

31) डा. जे. गेरसन डा कुन्हा वर्ल्ड एंड प्लेसेज इन एंड एपाउट बाम्बे, इंडियन एंटीक्वेरी 3(1874) 247

32) डा कुन्हा वर्डस 247-248

33) डा. जे.गेरसन डा कुन्हा,दी आरीजिन आफ बाम्बे (1900, रिप्रिन्ट न्यू देहली, एशियन एज्यूकेशनल सर्विसज 1993).56.

34) डा कुन्हा, ओरीजिन 56

35) सिटी गजेटियर, 3( 1910):356.357

36) सन्दर्भित-एडवर्ड्स, सेन्सस 1901, वाल्यूम 10 पार्ट 4:134

37) डा कुन्हा, ओरीजिन, 57-58 सन्दर्भ सर जेम्स मेकिन्टोश, मेमायर्स आफ दी लाइफ आफ सर जेम्स मेकिन्टोश व्दारा संपादित ( लंदन ई. मेक्सोन, 1835)

38) एडवर्ड्स, सेन्सस 1901 वाल्यूम 10 पार्ट 4:134

39) एडमिनिस्ट्रेशम रिफेट आफ दी म्युनिसिपल कमिशनर

फार दी सिटी आफ बाम्बे, फार दी इयर 1917-18 ( बाम्बे टाइम्स प्रेस, 1918) 125-133 (इसका संक्षिप्ति करण-एआर एम सी बी)

40) एडविन अरनोल्ड,इंडिया रीविजटेड (लंदन टुबनर एण्ड कं. 1886).54

41) करकरिया, चार्म,564-565.

42) डब्लू. एस.कैने, पिक्चरिस्क इंडिया : ए हेन्डबुक फार यूरोपियन ट्रेवलर्स (लंदन लार्ड रौटलेन एंड सन्स लि.1890). 12-73

43) सिडनी लो.ए विजन आफ इंडिया एज सीत ड्यूरिंग दी टूर आफ प्रिन्स एंड प्रिन्सेज आफ वेल्स (लंदन ! स्मिथ, एल्डर एंड कं.,1907) 33-34.

44) ईबिड,34

45) मोहर्रम मातम मनाने का एक वार्षिक पर्व है जो मुख्यत: शिक्षा मुसलमान व्दारा मनाया जाता है। बाम्बे सहित भारत के बहुतसे भागों में, 19वीं सदी में जो मोहर्रम के जुलूस निकलते थे उनमें सुन्नी मुसलमान और हिन्दू भी भाग लेते थे। ये पेगम्बर मुहम्मद के छोटे नाती इमाम हुसेन और उसके अनुयायियों की,कर्वला के मैदान में येजुएद की सेनाओं व्दारा की गई हत्या की यादगार में मनाया जाता है।

46) देखें उदाहरण के लिये सर दीतशई. वाचा,शेल्स फ्राम दी सेन्ड्स आफ बाम्बे बीईंग माइ रिकलेक्शन एंड रिमेनी सेन्सेज 1860-1875 ( बाम्बे के. टी.अंकलेसरिया 1920)

47) एस. एम. एडवर्डस सेन्सस आफ इंडिया 1901 वाल्यूम 11 बाम्बे (टाउन एंड आयलेण्ड) पार्ट 5, रिपोर्ट (बाम्बे टाइम्स आफ इंडिया प्रेस.1901)38-41 (अबसे कहेगें-सेन्सस 1901 वा. 11पार्ट 5) मराठी, गुजराती,हिन्दुस्तानी और कच्छी इंडो आर्यत भाषाएं है और उनमं अनेक शब्द समान है, भले ही उनके उच्चारणों में फर्क हो। यद्यपि इन भाषाओं में संस्कृत, फारसी और अरबी से और भी अनेक शब्द ले लिये गये हैं। मेरे सभी भारतीय संदर्भ इंगलिश में हैस और जब तक वे यह नहीं बतलाते कि किस समूह ने एक नाम विशेष का उपयोग किया, यह बिल्कुल संभव नहीं है कि सिर्फ नाम के आधार पर समूह का पत्ता लग जाय, क्यों कि यह संभव है कि वह उपरोक्त सभी भाषा ओं में समान अर्थ में मौजूद हो।

48) लाइफ इन बाम्बे .9

49) डा कुन्हा, ''वर्डस'' 294

50) वाचा, शेल्स, 3-5

51) डा. जाल एफ बलसारा, ''पारसीज दी मोस्ट अरबेनाइज्ड कम्युनिटी आन अर्थ'' - बी.डी. पेटिट पारसी जनरल हास्पिटल, 1912-1972 में, संपादित व्दारा एम डी पेटिट (बी डी पेटिट जनरल हास्पिटल की एक्जीक्यूटिव कमेटी का एडीटोरियल बोर्ड 1973). 26-29.

52) सिटी गजेटियर : 1 : 33-34

53) शेप्पर्ड, बाम्बे प्लेस.47-48

54) वाचा, शेल्स, 149

55) शेप्पर्ड, बाम्बे प्लेसा.62-63, कोटिंग केम्पबेल,3:595

56) वाचा, शेल्स,148

57) यह वर्तमान में है। बाम्बे में 1998-99 में शोध कार्य करते समय यह सिने गान मिला,जो टनटन पुरा स्ट्रीट पर एक मुस्लिम-बहुलक्षेत्र में स्थित था और उसे इजरायली मस्जिद के नाम से जाना जाता था।

58) जेम्स डगलस, ग्लिम्पसेज आफ ओल्ड बाम्बे एंड वेस्टर्न इंडिया (लंदन : सेम्पसन ली मार्सटोन एंड कं. 1900) 16.

59) डगलस, ग्लिम्पसेज 15-16

60) मेक्लीन, गाइड ट्र बाम्बे (1880),202

61) समीरा खान, 'सिटीज हेरीटेज गेन्स ग्राउंड, टाइल बाय टाईल' टाइम्स आफ इंडिया, (मुंबई)12 फ्रेब्रुअरी 1999

पृ.3 गुणवंधी बलराम, ''सिटीज फूटलूग गेट ए वाकी आन लोकल हिस्ट्री।'' टाइम्स आफ इंडिया ( मुंबई) 14 फेब्रुअरी 1999 पृ.-3

62) सडवर्डस, सेन्सस 1901 वाल्यूम 10 पार्ट : 4 :15

63) जे,सी. मासेलोस, ट्वर्डस नेशनलिज्म:ग्रुप एफीलिएशन्स एंड दी पोलिटिक्स आफ पब्लिक एसोसिएशन्स इन नाइनटीन्थ सन्चुअरी वेस्टर्न इंडिया (बाम्बे : पापुलर प्रकाशन, 1974),8

64) एडवर्डस सेन्सस 1901,वाल्यूम 10. पार्ट : :152

65) दी रिलीजियस एंड कल्चरल हेरीटेज आफ द बेनी-इजरायल्स आफ इंडिया (बाम्बे: गेट आफ मर्सी सिनेगान 1984)53-54

66) वाचा शेल्स, 426

67) शप्पर्ड, बाम्बे प्लेस 12न.

68) वाचा : शेल्स, 426-427

69) गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक केन द सबर्ल्टन स्पीक इन कालोनियल डिसकोर्स एंड पोस्ट कालोनियल थ्योरी :ए रीडर, संपादित व्दारा पेट्रिक विलियम्स एंड लारा क्रिसमेन (न्यूयार्क: कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस 1994),66-111

70) ए आर एम सी बी 1914-15 : 219

71) ए आर एम सी बी 1916-17-14

72) शेप्पर्ड, बाम्बे प्लेस, 34 कोटिंग दी टाइम्स आफ इंडिया -मे 1917

73) मंगला पुरन्दरे, ए केस स्टडी आफ दी भाटिया कम्यूनिटी (ए हिस्ट्री) (पी एच.डी.डिस्स. यूनिवर्सिटी आफ मुंबई, 1997).136

74) कलेक्टर्स मेप आफ बाम्बे 1926, महाराष्ट्र स्टेट आर्काइन (तबक MSA)

75) फील्ड रिसर्च नोट्स : सर जेम्स मेक्नेब्ब केम्पबल (चेयरमेन) रिपोर्ट आफ दी प्लेग कमीशन एपाइन्टेड बाय गवर्नमेन्ट रिजिल्यूशन नं. 1204/720 पै. आन दी प्लेज इन बाम्बे फार दी पीरियड एक्सटेडिंग फ्राम। जुलाई 1897टू दी 30 अप्रेले 1898 (बाम्बे :टाइम्स आफ इंडिया स्टीम प्रेस 1898) 143-144.

76) ताजिया और ताबूत इमाम हुसन के मकबरे और कफिन के प्रतीक हैं।

77) लाठी अर्था लकड़ी, सोटा,

78) एस. एस.एडवर्डस, दी बाम्बे सिटी पोलिस : ए हिस्टोरिकल स्केच 1672-1916. (लंदन आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1923)182.

79) शेप्पर्ड, बाम्बे प्लेस,11,

80) ईबिड, 16

81) ईबिड,94.

82) देखें ए आर एम सी बी 1917-18: 125-133

83) ईबिड, 125-133

84) सिटी गजेटियर,2:61

85) मस्सेलोस टू वर्डस नेशनलिज्म, 9-11

86) एडवर्डस, सेन्सस 1901, वाल्यूम 11, पार्ट 5:2-3

87) जेम्स पी.ओ ई टू सर जार्ज क्लर्क, 22 जून 1911 एंड इटरव्यू विथ मेमन्स रिगार्डिंग स्कीम37, 19 जून 1911, एम एस ए,जनरल डिपार्टमेंट हियर इन आवसर रेर्कड (जी. डी.) 1912, वाल्यूम, 45.

88) एस. एम. एडवर्ड्स टू एल राबर्टसन,3जुलाई 1911, एम एस ए जी, डी. 1912, वोल -45, कंपाइलेशन नं.531 पार्ट 1: 47-51 एंड एस एम एडवर्डस टू गवर्नमेनट नं. 6180/6,1जुलाई 1911, इन एम एस ए, जी डी. 1912 वाल्यूम 45. कंपाइलेशन नं. 531 पार्ट1 : 55-63.

89) मि. ओई की स्चीच, बाम्बे कार्पोरेशन डिबेट 16 और 20 नवम्बर को इन सिलेक्शन्स प्राम दी बाम्बे कार्पोरेशन प्रासीडिनग्स एंड डिबेट आन दी सिटी आफ बाम्बे इंयुवमेंट ट्रस्टस सेन्डहर्स्ट रोड टू क्राफर्ड मार्केट स्ट्रीट आफ स्कीम (बाम्बे टाइम्स प्रेस.1911) 1.50

90) डेमी आफीशियल करसपोन्डेन्स, गर्वर्नर की टिप्पणियों के जबाब में, 2 जुलाई 1911, एम एस ए. जी डी 1912 वाल्यूम 45 कंपाईलेशन नं. 531 पार्ट 1:45

91) जेम्स ओई टू राबर्ट सन 4 जुलाई 1911, 5 जुलाई एंड 6अगस्त 1911 विथ एनक्लोजर्स, एम एस ए, जी डी, 1912 वाल्यूम 45, कंपाइलेशन नं. 531 पार्ट 1:75-89, 113.

92) सिटी गजेटियर, 1: 65-68 सेम्युअल टी, शेप्पर्ड, बाम्बे : टाइम्स आफ इंडिया प्रेस, 1932), 74-75

93) सिटी गजेटियर; 2:65

94) यह एक विरोधाभास वाली बात ध्यान देने योग्य है कि 1818में अंगे्जों ने मराठों को परास्त काके पश्चिमी भारत के विशाल भू भागों पर अपना अधिकार जमा लिया था पर उन्होंने सिर्क ऐसे ही क्षेत्रों को, जो आकार में बड़े थे पर कम बसे हुए थे इंगलिश नाम दिये। इनमें पहाड और पर से देखने के पाइंट शामिल हैं। ये वे स्थान जहाँ अंग्रेज लोग, बाम्बे के प्रतिकूल जलवायु के बुरे असर को दूर करने के लिये गाकर वहां अपना काफी सनय व्यतीत करते थे। महाबलेश्वर एक ऐसा ही स्वास्थ्य था औ~19वीं सदी में 1828 के बाद किसी समय से, बाम्बे-प्रेसीडेन्सी की राजधानी साल के ज्यादातर महिने वहां रहती थी। वहां का भूभाग अनेक अग्रेजी नामों से भरा पड़ा है। जैसे कि एलफिन्स्टन पाइंट,काटेज पाइंट सेड्डुल हि और मालकम हिल। देखे लाइफ इन बाम्ब। 65-112

95) सिटी गेटियर, 1:30 एडवर्डस इन सेन्सस 1901, वोल.10 पार्ट 4:75 लिखता है बाम्बे में 6बड़े कोलीवाड़ा थे।

96) मीरा कोसाम्बी, बाम्बे इन ट्रांजीशन, 31.

97) एडवर्ड्स सेन्सस 1901 वोले. 10 पार्ट 4:75

98) सिटी गजेटियर, 2:121-123

99) शेप्पर्ड, बाम्बे. 121.

100) एडवर्डस,सेन्सस 1901, वोल 10, पार्ट 4:115

102) सिटी गजेटियर 1:301 31

103) दीनशा ई वाचा. ए फयनांशियल चेप्टर इनदी हिस्ट्री आफ बाम्बे सिटी. (बाम्बे-कमर्शियल प्रेस: 1910)77.

104) डा. कुन्हा ओरिजिन.7

105) शेप्पर्ड, बाम्बे प्लेस. 43: डा कुन्हा. ओरिजिन.8

106) डा कुन्हा ओरिजिन :7-8

107) सिटी गजेटियर 1:200

108) डा कुन्हा. ओरिजिन, 8. सिटी गजेटियर 1:200

109) सिटी गजेटियर,1:31 फ्राम डा कुन्हा - ऐसा लगता है कि कावेल क्षेत्र, ओल्ड हनुमान लेन जो कि कालरादेवी रोड के पूर्वी ओर बाजार भाग में स्थित था।

110) रिपोर्ट आन डवलपमेन्ट प्लान फार ग्रेटर बाम्बे 1964 (बाम्बे गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल प्रेस, 1964)

**अनुवादक : ज. कु. निर्मल**

■ ■ ■ ■ ■

ysore Sandal
12:23